ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 04 जनवरी 2026 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 04 जनवरी 2026 से 10 जनवरी 2026

माघ कृ. 01 ● वि० सं०-2082 ● वर्ष 67, अंक 01, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 201 ● सृष्टि-संवत् 1,96,08,53,126 ● पृ.सं. 1-12 ● मूल्य - 5/- रू. ● वार्षिक शु. 300/- रू.

डी.ए.वी. नारायणगढ़ द्वारा नशामुक्ति अभियान का हुआ सफल आयोजन

डी.ए.वी. स्कूल नारायणगढ़ द्वारा नशे के विरुद्ध 'नो नशा नेशन' कार्यक्रम का आयोजन नगर खेड़ा नारायणगढ़ में सफलतापूर्वक किया गया, जिसमें 100 कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन हुआ। आयोजन रविवार प्रातः 11:30 बजे आयोजित किया गया जिसमें मुख्यातिथि श्री पवन सैनी (पूर्व एम.एल ए,बीजेपी) एवं डॉक्टर अनिरुद्ध भूषण के अतिरिक्त विद्यालय के छात्र–छात्राएँ अभिभावकगण, सामाजिक संगठन बुद्धि जीवी, मीडिया जगत्, आर्यसमाज के सदस्य, नारायणगढ़ शहर के सामान्य जन एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने अपनी सहभागिता निभाई।

अभियान का प्रारम्भ विद्यालय से जागरूकता रैली निकालकर किया गया। नशा मुक्ति संबंधी बैनर हाथ में लेकर नारे लगाते हुए छात्र नगर खेड़ा तक गए, जहाँ पर विधिवत 100 कुण्डीय हवन समारोह आयोजित किया गया।

उपस्थित छात्रों को नशा विरोधी शपथ दिलाई गई। इस उपलक्ष्य में एक हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में नशा मुक्ति पर लघु नाटिका, मनोवैज्ञानिक डॉक्टर अनिरुद्ध भूषण द्वारा दी गई विस्तृत जानकारी, मुख्य आकर्षण रहे।

मुख्यातिथि ने कहा कि युवाओं को नशे के बढ़ते ख़तरे से बचाना तथा उन्हें स्वस्थ व जागरूक नागरिक बनाने की दिशा में डीएवी स्कूल का यह एक प्रशंसनीय क़दम है।

आर्य युवा समाज के अध्यक्ष श्री योगी सूरी जी ने ऑडियो रिकॉर्डिंग के द्वारा नशे के ख़िलाफ़ अपना संदेश देते हुए कहा कि "नशा पूरे समाज व पूरे देश के लिए चुनौती है।" युवाओं को नशा त्याग कर अपने मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। प्रधानाचार्य ने अपने संबोधन में कहा कि डीएवी स्कूल समय–समय पर इस अभियान को अनवरत चलाएँगी। कार्यक्रम का समापन शांतिपाठ से हुआ।

डी.ए.वी. चेन्नई में मानवाधिकार दिवस

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, वेलचरी, चेन्नई के तत्त्वावधान में मानवाधिकार और मौलिक कर्त्तव्य दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत गायत्री मंत्र के उच्चारण से हुई।

नाटक के माध्यम से मौलिक अधिकारों पर चर्चा की गई। नाटक में कानूनी सहायता, छात्रवृत्ति और सामूहिक सक्रियता जैसे व्यावहारिक समाधान भी बताए गए। मौलिक कर्त्तव्यों के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला गया।

विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे

समाज की प्रगति में सक्रिय योगदानकर्ता बनें, जिससे एक विचारशील और गहन वातावरण का निर्माण हो। विद्यार्थियों को अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों का सही अनुपालन करने के लिए प्रेरित किया गया।

विद्यार्थियों द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया जिसमें अधिकारों और कर्त्तव्यों के परस्पर संबंध को समझाते हुए यह बताया गया कि ये दोनों मिलकर ज़िम्मेदार नागरिकता को प्रोत्साहित करते हैं।

विद्यार्थियों द्वारा एक भावनात्मक समाज की प्रगति ... राष्ट्रगान और शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

डी.ए.वी. कोटकपूरा (पंजाब) 'भारत को जानो' प्रतियोगिता में श्रेष्ठ

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, कोटकपूरा (पंजाब) ने "भारत को जानो" प्रतियोगिता (जूनियर वर्ग) में उत्तर भारत क्षेत्र पर प्रथम स्थान प्राप्त कर ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। परिणीता शर्मा एवं माधव गर्ग ने यह गौरवपूर्ण सफलता अर्जित की। उत्कृष्ट टीमवर्क के बल पर 95 अंकों के भारी अंतर से विजय प्राप्त की।

प्राचार्य डॉ. राजवीर सिंह कंग ने विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई दी और कहा कि "भारत को जानो" जैसी प्रतियोगिताएँ विद्यार्थियों में न केवल ज्ञानवृद्धि करती हैं, बल्कि नेतृत्व, अनुशासन, टीम भावना और राष्ट्रप्रेम

जैसे मूल्यों को भी सुदृढ़ करती हैं।

प्रतियोगिता में उत्तर भारत के पाँच राज्यों की आठ श्रेष्ठ टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में डी.ए.वी. कोटकपूरा की टीम ने अध्ययन, आत्मविश्वास और

श्री अजय गोस्वामी ने हर्ष व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों को बधाई दी।

जो सब जगत् के पदार्थों को संयुक्त करता और सब विद्वानों का पूज्य है और ब्रह्मा से लेके सब ऋषि मुनियों का पूज्य था, है और होगा, इससे उस परमात्मा का नाम **'यज्ञ'** है। क्योंकि वह सर्वत्र व्यापक है। स. प्र. समु. १

{संपादक – पूनम सूरी}

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 04 जनवरी 2026 से 10 जनवरी 2026

हे सोम! हृदय–कलश में प्रवेश करो

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

पवस्य सोम देववीतये वृषा, इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमाविश।
पुरा नो बाधाद् दुरिताति पारय, क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते।।

ऋग् ९.७०.९

ऋषिः **रेणुः वैश्वामित्रः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **जगती**।

● **(सोम)** हे सोम परमात्मन्! **(तू)**, **(वृषा)** वर्षक **(होता हुआ)**, **(देववीतये)** दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए, **(पवस्य)** प्रवाहित हो, **(इन्द्रस्य)** आत्मा के, **(हार्दि)** हृदय–रूप, **(सोमधानं)** सोम–कलश में, **(आविश)** प्रविष्ट हो।, **(बाधात्)** बाधे जाने से, **(पुरा)** पहले, **(नः)** हमें, **(दुरिता अति)** पापचरणों से लंघाकर, **(पारय)** पार करदे। **(क्षेत्रवित्)** मार्ग का ज्ञाता, **(विपृच्छते)** विशेषरूप से पूछनेवाले के लिए, **(दिशः)** दिशाओं को, **(आह हि)** बताता ही है।

● हे रसागर सोम परमात्मन्! तुम 'वृषा' हो, रस की वर्षा करनेवाले हो। तुम दिव्य गुणों के रस के साथ मेरे अन्दर प्रवाहित होवो। तुम आत्मा के हृदय–रूप सोम–कलश में आकर प्रविष्ट होवो। मेरा आत्मा न जाने कब से सोम–पान के लिए उत्कंठित हो रहा है, उस प्यासे की तृषा को दूर करो। तुम कामवर्षी हो, मेरी कामना को पूर्ण करो। तुम आनन्दवर्षी हो, मुझपर आनन्द की वर्षा करो।

कभी–कभी मेरा आत्मा 'दुरितों' से घिर जाता है। पाप–भावनाएँ उसे आगे बढ़ने से रोकती हैं। पाप–कर्म उसे निगलने के लिए तैयार रहते हैं। आसपास का पापमय वातावरण उसे पाप–मार्ग पर चलने के लिए प्रलोभित करता है। ऐसे समय में हे मेरे सोम प्रभु! क्या तुम खड़े देखते ही रहोगे? क्या तुम मुझे 'दुरितों' से ग्रसा जाने दोगे? क्या तुम मुझे पाप–ताप के प्रहारों से छलनी हो जाने दोगे? क्या तुम मुझे दुराचार–रूप शत्रुओं से आक्रान्त हो जाने दोगे? नहीं, तुम मेरे उद्धारक होकर आओ। इससे पहले कि 'दुरित' मेरे आत्मा पर प्रभुत्व पायें, उसे पतनोन्मुख करें, तुम त्वरित गति से मेरे पास आ जाओ और मुझे उन दुरितों से लंघाकर पार कर दो। संसार का यह नियम है कि जो 'क्षेत्रवित्' है, मार्ग का ज्ञाता है, वह पूछनेवाले को दिशा बताता ही है। तुमसे बढ़कर 'क्षेत्रवित्' बढ़कर मार्गज्ञ अन्य कौन है! अतः हे मेरे सोम प्रभु! मैं तो तुम्हीं से दिशा पूछता हूँ। मैं दिग्भ्रान्त हो रहा हूँ, तुम कुतुबनुमा यन्त्र की सुई बनकर मुझे दिशा दर्शाओ। यदि तुमसे दिशा–ज्ञान न मिला, तो मेरा जीवन–पोत भव–सागर में डूबकर नष्ट–भ्रष्ट हो जायेगा। हे प्रभु! मुझ भूले को सही राह दिखाओ, मुझ भटके को गन्तव्य लक्ष्य पर पहुँचाओ।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

त्यागमयी देवियाँ!

● महात्मा आनन्द स्वामी

गत अंकों में हम चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी की शौर्य गाथा शुधि–पाठकों के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं। वैदिक संस्कृति में पतिव्रत अत्यन्त पवित्र व गौरवमयी सम्बन्ध माना गया है।

इसी का निर्वहन पद्मिनी ने किया। अपनी सूझ–बूझ से वे आततायी अलाउद्दीन को चकमा देकर अपने पति को इस कुटिल राजा की कैद से मुक्त कराकर स्वदेश लौट गई, इससे भिन भिनाए अलाउद्दीन ने घायल शेर की भाँति द्विगुणित शक्ति से चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। राजपूत सेना ने आततायी सेना के छक्के छुड़ा दिए परन्तु उनकी संख्या कम थी, अब वे राज्य के अन्दर से ही आक्रमण करने लगे। अन्त में राशन आदि की समस्या आई और राजपूतों ने द्वार खोलकर अलाउद्दीन की सेना पर अन्तिम वज्रपात किया। राजपूतों का साहस देखकर दिल्ली की शाही सेना में भगदड़ मच गई परन्तु शाही सेना संख्या में अधिक होने के कारण राजपूत सेना के सभी वीर वीरगति को प्राप्त हो गए।

इधर महारानी पद्मिनी ने अपनी 13 हज़ार वीराङ्गनाओं के साथ ज्वलन्त चिताओं में कूदकर पतिव्रत धर्म का पालन किया। अलाउद्दीन के पापी मंसूबे धरे के धरे रह गए। अलाउद्दीन जब राजधानी में प्रविष्ट हुआ और चिताएँ जलती देखी तब एक वृद्धा से पद्मिनी का महल पूछा तो वृद्धा ने पद्मिनी की चिता से अंगारा निकालकर अलाउद्दीन के ऊपर फेंककर कहा कि यह है वीरागंना। क्या कभी शेर का भोजन कुत्तों को मिलता है।

....अब आगे

उपसंहार

साढ़े छः सौ वर्ष पश्चात् जिस समय पद्मिनी की यह करुणाजनक तथा वीरतापूर्ण गाथा मैं लिख रहा था तो मेरे सामने पंजाब, जम्मू–कश्मीर और हैदराबाद दक्षिण की वे वीर देवियाँ आ रही थीं जिन्होंने देश–विभाजन के कारण उसी प्रकार से अपने बलिदान दिये जिस प्रकार पद्मिनी और 13 हज़ार राजपूतानियों ने दिये। देश–विभाजन की ये करुण कथाएँ जब कोई इतिहासकार लिखेगा तो संसार देख लेगा कि लगभग साढ़े छः सौ वर्ष बीत जाने के पश्चात् भी भारत की ललनाओं को इस यवन सभ्यता के कारण उसी प्रकार के अत्याचार सहन करने पड़े जैसे पद्मिनी और उसकी सखियों को सहन करने पड़े थे।

यह मार्च 1947 की बात है जब रावलपिंडी, जेहलम, अटक इत्यादि के जिलों में अत्याचार जाग उठा। इसका सबसे अधिक भयानक रूप रावलपिंडी जिला की तहसील गुज्जर खाँ में प्रकट हुआ। एक छोटी–सी सुन्दर बस्ती 'थोहा खालसा' इसी तहसील में थी, जो एक छोटी–सी पहाड़ी पर थी। जल के स्रोत तथा कूप पहाड़ी से नीचे उतर के थे। यह सौन्दर्य के लिए बड़ा विख्यात था। यहाँ की देवियाँ विशेष रूप से रूपवती होती थीं। मैं 'थी' 'था' का प्रयोग इसलिए कर रहा हूँ कि अब तो यह ग्राम पाकिस्तान में जा चुका है वहाँ के हिन्दू–सिख निवासी सब–के–सब वहाँ से खदेड़ दिये गये हैं और निर्वासित होकर कौन जाने कहाँ, जीवन के दिन पूरे कर रहे हैं !

'थोहा खालसा' के छोटे–से ग्राम में लगभग दो–ढाई हजार की आबादी थी। ये लोग बड़े श्रद्धालु और सेवक थे। अतिथि सेवा भी बड़े प्रेम से करते थे। पाकिस्तान बनाने का भूत इस इलाके के मुसलमानों को बुरी तरह से चिमट चुका था। एक दिन वे पागल हो उठे और लगभग दस हज़ार ये पगले नाना प्रकार के शस्त्र लिये 'थोहा खालसा' पर चढ़ दौड़े। अंग्रेजी सरकार के राज्य में यह अपनी प्रकार की पहली घटना थी। 'थोहा खालसा' वालों ने पुलिस के पास आदमी दौड़ाए, परन्तु कोई न पहुँचा। तब उन्होंने स्वयं अपनी रक्षा का प्रयत्न आरम्भ किया–गोली का उत्तर गोली से देने लगे, तलवार का तलवार से। तीन दिन तक निरन्तर यह युद्ध होता रहा। परन्तु कहाँ दस हज़ार, कहाँ इस छोटे–से ग्राम के लड़ने योग्य एक–डेढ़ हजार लोग ! फिर ये लोग थे एक स्थान में घिरे हुए। पानी तक उनके पास नहीं। तीन दिन तो प्यासे लड़ते रहे और पूरी वीरता से सामना करते रहे, परन्तु जब तीन दिन तक पानी न मिला, बालक–बच्चे बेसुध होने लगे, देवियाँ और युवक प्यास से तड़पने लगे तो 'थोहा खालसा' के वासियों ने सफेद झण्डा खड़ा किया।

यवनों ने सफेद झण्डा देखकर पूछा, "क्या चाहते हो ?"

उत्तर दिया गया, "हम तीन दिन से प्यासे हैं, पानी ले आने दो।" पाकिस्तानियों ने कहा, "पहले मुसलमान बनो, फिर पानी पी सकोगे।"

"अच्छा, देवियों और बच्चों ही को जल पीने के लिए कूप पर जाने दो।" ग्रामवासियों ने प्रार्थना की।

"बहुत अच्छा। केवल औरतें और बच्चे ही बाहर आएँ, कोई पुरुष न आए।" यवनों ने उत्तर दिया।

तब लगभग एक सौ देवियाँ और बच्चे 'थोहा खालसा' की पहाड़ी से नीचे उतरकर सरदार गुलाबसिंह एडवोकेट के कुएँ पर पहुँचे। इनके वहाँ पहुँचते ही चारों ओर से पाकिस्तानियों ने इन देवियों को घेर लिया। इन देवियों में ही सरदार गुलाबसिंह एडवोकेट की धर्मपत्नी श्रीमती लाजवन्ती भी थी। उसने कहा, "शीघ्र जल पीकर लौट चलो।"

परन्तु उन्होंने सुना कि घेरा डाले हुए पाकिस्तानियों में से कितने ही व्यक्ति देवियों को संकेत कर रहे थे, "वह मैं लूँगा, यह मैं लूँगा, वह तो मेरे ही योग्य है।"

श्रीमती लाजवन्ती ने देवियों से कहा, "सुन रही हो जो प्रस्ताव किये जा रहे हैं ?"

"हाँ माता जी, सुन रही हैं।" देवियों ने उत्तर दिया।

लाजवन्ती ने पूछा, "तो फिर क्या इच्छा है ?"

"किसी प्रकार से हमारा धर्म और इज्जत बच जाये।"

लाजवन्ती ने कहा, "तो सुनो ! जैसे मैं कहूँ वैसे करती चलना।"

कुएँ से जल निकाला गया। सब देवियों ने मुँह–हाथ धोए और कूप की मुँडेर पर प्रभु–भजन करने लगीं।

पाकिस्तानी शोर मचाने लगे, "क्या कर रही हो? शीघ्र हमारे साथ चलो !"

श्रीमती लाजवन्ती ने कहा, "वीरो! घबराओ नहीं, हम अभी चलती हैं।"

तब वे सब उठ खड़ी हुईं। इन देवियों के पिता, भाई, पति तथा दूसरे सम्बन्धी दूर खड़े सब–कुछ देख रहे थे। दूर ही से देवियों ने हाथ जोड़कर उनकी ओर देखते हुए बड़े गम्भीर स्वर में कहा, "आज तक जो सेवा हो सकी, कर दी। जो भी त्रुटि रह गई हो, वह क्षमा कर देना। अब हम भगवान् की गोदी में जा रही हैं।"

इतना कहा और सबसे पहले श्रीमती लाजवन्ती ने उस कूप में छलाँग लगा दी, और फिर धड़ाम–धड़ाम सब देवियाँ और बालक उसमें कूद पड़े। कूप में पहुँचते ही सब देवियाँ और बच्चे डूब गए। पाकिस्तानी उसी प्रकार हाथ मलते रह गए जिस प्रकार अलाउद्दीन पद्मिनी की चिता देखकर हाथ मलता रह गया था।

इस घटना के दसवें दिन मैं श्रीमती रामेश्वरी नेहरु, श्रीमती शन्नो देवी, श्रीमती डॉक्टर शकुन्तला, श्रीमती भाग के साथ उस कुएँ पर पहुँचा। 'आर्य प्रादेशिक सभा' की ओर से पीड़ितों की सेवा–सहायता के लिए मैं रावलपिंडी पहुँचा हुआ था। वहीं से हम सब सेना की सहायता से 'थोहा खालसा' पहुँचे। जब शहीद देवियों के इस कूप पर पहुँचे, तो अत्यन्त दुर्गन्ध आ रही थी। देवियों के शव गल–सड़ रहे थे नासिका बन्द करके कुएँ के अन्दर देखा तो देवियों के शव फूल चुके थे।

25 शव तो स्पष्ट गिने गए; शेष उनके नीचे थे। एक नन्हा–सा शिशु अपनी माता की छाती के साथ था, उसका शव भी फूल गया था। यह सारी घटना सुनाने के लिए एक युवक हमारे साथ था, जिसका विवाह हुए अभी एक मास भी नहीं बीता था, और जिसकी नव–विवाहिता पत्नी (कँवल या कमला) भी उन्हीं बलिदान देनेवाली देवियों में विश्राम कर रही थी।

इससे भी अधिक अत्याचार इसी गुज्जर खाँ तहसील के ग्राम 'दुभेरन' में हुआ, जहाँ तेल के कड़ाहे गर्म किये गये और देवियों की गोदियों से नन्हें–नन्हें शिशु छीनकर कहा गया कि मुसलमान बनना स्वीकार करो, अन्यथा तुम्हारे बच्चे जलते तेल में फेंक दिये जायेंगे। जब माताओं ने ऐसे प्रस्ताव अस्वीकार कर दिये तो उन शिशुओं को जलते तेल में फेंककर भून डाला गया। फिर माताओं से कहा गया–या तो मुसलमान बनो या अपने बच्चों को खाओ। परन्तु पद्मिनी की अनुगामिनियों ने अपने प्राण उन्हीं जलते तेल के कड़ाहों में गिरकर त्याग दिये, पर अपने धर्म को बचा लिया।

ऐसी घटनाएँ एक–दो ग्रामों या नगरों में नहीं हुईं, लगभग हर ऐसी बस्ती में हुई हैं, जहाँ पाकिस्तानियों ने अपनी सभ्यता का परिचय दिया है। जिला रावलपिंडी के ग्राम पोठोहार में भी देवियों ने अपने धर्म की रक्षा करने हेतु कुएँ में छलाँग लगाकर प्राण त्याग दिये। ऐसी देवियों की संख्या 55 बतलाई जाती है।

जब 15 अगस्त 1947 को देश–विभाजन की घोषणा हो गई तो दिल्ली में स्वराज्य–प्राप्ति के जन–समारोह मनाए जाने लगे। जम्मू तथा कश्मीर की सुन्दर नगरियों का पाकिस्तानी दरिन्दे सर्वनाश करने लगे। मीरपुर, कोटली, भिम्बर, राजौरी, नौशहरा उजाड़ दिये; मुजफ्फराबाद, उड़ी, बारामूला और पुंछ के इलाकों में ऊधम मचा दिया। जेहलम नदी के दोनों तटों पर आबाद बारामूला की नगरी के कितने ही सुन्दर भवन जला डाले और देवियों को नग्न करके उनका जुलूस निकाला।

भिम्बर में जब यही अत्याचार आरम्भ हुआ तो कितनी ही देवियों ने कुओं में कूदकर प्राण दे दिये और सहस्रों युवतियों ने विष खाकर प्राणों का अन्त कर दिया।

और राजौरी में तो वही दृश्य देखा गया जो साढ़े छः सौ वर्ष पूर्व चित्तौड़ में देखा गया था।

राजौरी रियासत जन्मू की एक बहुत सुन्दर नगरी थी। जब पाकिस्तानियों ने मार–धाड़ आरम्भ की तो ग्रामों से जनता राजौरी नगरी में आ गई थी। जब राजौरी पर 20–25 हज़ार राक्षसों ने आक्रमण किया तो राजौरी में 14 हज़ार की आबादी हो चुकी थी, परन्तु इनमें से अधिक संख्या देवियों और बच्चों की थी। आक्रमण होने पर राजौरी–निवासियों ने अपनी रक्षा का यत्न किया। कितने ही दिन वे लड़ते रहे और अत्याचारियों को नगर में घुसने नहीं दिया। परन्तु शक्ति कम होती चली गई। पाकिस्तानियों के पास युद्ध की पूरी सामग्री थी। यहाँ केवल शारीरिक बल था। जब नगरवासियों ने देखा कि अब अत्याचारियों को रोकना असम्भव हो रहा है तो उन्होंने देवियों से कह दिया कि अब जो इच्छा हो करो। राजौरी की देवियों ने एकत्र होकर पहले ही निश्चय कर रखा था कि ऐसा समय आने पर उनका क्या कर्त्तव्य होगा। उन्होंने नगर–भर की लकड़ियाँ, छतों के शहतीर, मकानों के द्वार आदि एकत्र करके रख लिये थे। जब पुरुषों की ओर से अन्तिम बात कह दी गई तो देवियों ने मिलकर प्रभु–भक्ति के गीत गाए। कहा जाता है कि लगभग तीन हजार देवियाँ चिताओं में बैठकर भस्म हो गईं और पाकिस्तानी लुटेरे राजौरी में घुसे तो ये चिताएँ जल रही थीं।

अब तो पाकिस्तानियों से भारतीय सरकार की बहादुर सेनाओं ने राजौरी नगर ले लिया है, परन्तु देखनेवालों ने देख लिया कि जिस सभ्यता ने पाकिस्तान को जन्म दिया है, वह साढ़े छः सौ वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद भी वही अत्याचार कराती है जो यवन–राज्य में कराती थी।

मीरपुर की देवियों ने पर्वत के शिखर से छलाँग लगाकर अपने प्राण त्याग दिये और मुजफ्फराबाद की सहस्रों युवतियों ने 'किशन गंगा' के अथाह जल की गोदी में उतरकर प्राण दे दिये, परन्तु अपने धर्म की रक्षा कर ली।

'कोटली' के स्त्री–पुरुषों ने जो वीरता दिखाई, वह बहुत ही प्रशंसनीय है। 'कोटली' मीरपुर से चालीस मील दूर है। जब कोटली वालों ने सुना कि पाकिस्तानी लुटेरों ने मीरपुर लूट लिया है और सहस्रों देवियों को कैद करने के पश्चात् वह 'खुई रट्टा' होकर कोटली पहुँचने वाले हैं तो उन्होंने अपनी रक्षा का प्रयत्न आरम्भ किया। कुछ दिनों के पश्चात् पाकिस्तानी लुटेरों ने 'कोटली' पर आक्रमण कर दिया। इस नगरी के युवकों और युवतियों ने मोर्चे सँभाल ही रखे थे; लुटेरों के कितने ही सशस्त्र व्यक्ति मारे गए। इधर 'कोटली' के भी मारे युवक जाने लगे। यह युद्ध चालीस दिन जारी रहा, परन्तु 'कोटली' के स्त्री–पुरुषों ने लुटेरों को नगरी में प्रविष्ट नहीं होने दिया।

इन 40 दिनों में देवियों ने पुरुषों से बढ़कर वीरता, निडरता और सहनशीलता का परिचय दिया। इस नगरी की प्रभुभक्तिन बीबी भाग्यवन्ती ने देवियों को ऐसी सुन्दरता से संगठित किया कि पुरुष भी देखकर चकित रह गए। 'कोटली' के तमाम मोर्चों पर भोजन पहुँचाना, बन्दूकों में गोलियाँ और बारूद भरना तो इन देवियों का विशेष कार्य था। इसके अतिरिक्त कितने ही मोर्चे देवियों ने स्वयं भी सँभाल रखे थे। वे स्वयं गोलियाँ चलाती थीं और लुटेरों के मुँह मोड़ देती थीं। कोटली–निवासियों ने इन चालीस दिनों में भयंकर तप किया। जब भारतीय सेना 'कोटली' पहुँची तो उसने देखा कि लुटेरे 'कोटली' पर चारों ओर से आक्रमण की तैयारियाँ कर रहे हैं। यही उचित समझा गया कि वहाँ से सबको निकालकर जम्मू भेज दिया जाये। कोटली की देवियों ने इस अवसर पर भी बड़े धैर्य और बुद्धिमत्ता से काम लिया और सब देवियाँ सुरक्षित कोटली से निकल आईं।

जब आधुनिक काल की इन पद्मिनियों तथा वीरांगनाओं का इतिहास लिखा जायेगा तो एक स्वर से पढ़नेवाले कह उठेंगे –

क्या नहीं अबला कर सके,
क्या नहीं सिन्धु समाय !
क्या नहीं पावक में जरे,
काल काहे न खाय !!

शिक्षा–

सतीत्व की पवित्रता में ही नारी–जीवन की सफलता है।

मेरा मेरा कुछ नहीं, सब कुछ है तेरा।
क्या रखा दुनिया में, ये सब है झमेला।।

पहले हमको अपनी बुराइयाँ दूर करनी चाहिएँ। तभी हम दूसरों को कहने लायक होंगे।

गतांक से आगे...

भारतीय नवजागरण और स्वामी दयानन्द सरस्वती

● डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री

उन्नीसवीं शताब्दी नवजागरण युग के नाम से विख्यात है। आत्मीय सभा, ब्राह्मसमाज, आदि ब्राह्मसमाज, परमहंस समाज (1849 ई.), नवविधान समाज, देव–समाज, प्रार्थना–समाज, मुनि–समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी, रामकृष्ण मिशन प्रभृति अनेक संस्थाएँ उस युग में स्थापित हुईं, पर इनमें ब्राह्म–समाज को छोड़कर कोई भी संस्था चिरजीवी या प्रभावी न हो सकी। ब्राह्मसमाज का प्रभाव भी केवल बंगाल में उच्चवर्णीय हिन्दुओं तक सीमित रहा। जबकि आर्यसमाज ने पूरे भारत में विशेषतया पंजाब, संयुक्त प्रान्त, राजपूताना, मध्यभारत, बिहार और मुम्बई में व्यापक प्रभाव प्रकट किया। स्वामी दयानन्द को लम्बा समय आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार के लिए न मिल सका। वे आर्यसमाज की स्थापना बाद केवल 8 वर्ष तक ही जीवित रह सके। फिर भी उन्होंने समाज के सभी क्षेत्रों में ऐसी भारी क्रान्ति कर दी जैसी बुद्ध और शंकराचार्य के बाद दूसरा कोई न कर सका था। लाखों लोग आर्यसमाज के झण्डे के नीचे आए। अविभाजित पंजाब आर्यसमाज का सांस्कृतिक केन्द्र बना। महात्मा हंसराज ने डी.ए.वी. कॉलेज की नींव डाली। स्वामी श्रद्धानन्द ने वैदिक व आर्य संस्कृति के आधार पर गुरुकुल काँगड़ी की स्थापना की। स्वामी दर्शनानन्द ने शास्त्रार्थों की परम्परा को जिसे दयानन्द ने चालू किया था, आगे बढ़ाया और सर्वथा निःशुल्क संस्कृत–शिक्षण के गुरुकुलीय संस्थान स्थापित किये। पं. गुरुदत्त ने वैदिक अनुसंधान व वेदधर्म की प्रतिष्ठा की। लाला देवराज ने सर्वप्रथम जालन्धर में कन्या स्कूल खोला। पं. लेखराम ने विधर्मियों से शास्त्रार्थ किये और वैदिक धर्म तथा आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार में अपनी आहुति दी। स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि का चक्र चलाया और साम्प्रदायिक मतान्धता की गोलियों के शिकार हुए। लाला लाजपतराय और महर्षि के प्रखर शिष्यों ने देश में स्वतन्त्रता की धूम मचाई। अछूतोद्धार, स्त्रीशिक्षा तथा सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में आर्यसमाज के तेजस्वी प्रचारकों के बहुविध प्रयासों एवं हंसराज, श्रद्धानन्द, लाजपतराय सरीखे मंगल–मूर्तियों का उत्तर भारत में ऐसा सांस्कृतिक प्रभाव पड़ा कि उसका मूल्य शब्दों में आँका नहीं जा सकता। देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति में आर्यसमाज से सम्बद्ध लोगों द्वारा क्रान्तिकारी आन्दोलनों तथा अहिंसक सत्याग्रहों में निभाई गई भूमिका स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है।

{(क) स्वामी दयानन्द के स्वराज्यविषयक चिन्तन से अनुप्राणित होकर श्यामजी कृष्ण वर्मा, भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशन सिंह, गेंदालाल दीक्षित, सोहनलाल पाठक, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, क्रान्तिवीर, मोहनलाल, मदनलाल धींगड़ा, भाई बालमुकुन्द, प्रतापसिंह बारहट, लाला बलराज आदि ने अपने प्राणों का बलिदान देकर देश की आजादी के संघर्ष को गति दी। इसी प्रकार स्वाधीनता प्राप्ति के लिए किये गये वैधानिक संघर्ष में भाग लेने वाले आर्यसमाजियों की सूची बहुत लम्बी है। कांग्रेस द्वारा संचालित स्वतंत्रता–संग्राम के आन्दोलनों में भाग लेने वाले लाखों आर्यसमाजियों के नामों को कौन जानता है? डॉ. पट्टाभिसीतारमैया लिखित 'कांग्रेस का इतिहास' में आर्यसमाजियों की भागीदारी सर्वाधिक बताई गई है। इस विषय पर पठनीय ग्रन्थ–राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा लिखित 'भारतीय स्वाधीनता संग्राम और आर्यसमाज' है।

(ख) शहीदे आजम भगतसिंह की जेल नोटबुक का एक अंश इस प्रकार है–

आर्यसमाज

"वास्तव में आर्यसमाज पश्चिमी प्रभाव के विरुद्ध एक राष्ट्रवादी पुनर्जागरण है।...... लेकिन 1907 में कुछ शरारती लोगों ने आर्यसमाज के विरुद्ध अफवाहें फैलाना शुरू किया, तब इस सम्प्रदाय ने अपने पुराने धर्म सिद्धान्त को दुहराते हुए इस आशय का एक प्रस्ताव प्रकाशित करने की बुद्धि मत्ता दिखाई कि इस संगठन का किसी भी किस्म के राजनीतिक निकाय या किसी भी किस्म के राजनीतिक आन्दोलन से कोई सम्बन्ध नहीं है। अब यदि एक निकाय के रूप में समाज द्वारा चरमपन्थी राजनीति से सम्बन्ध–विच्छेद के इस दावे को मान भी लिया जाये, तब भी कट्टर हिन्दुओं के लिए यह बात गौरतलब होनी ही चाहिए कि भले ही, आर्यसमाज में पंजाब की हिन्दू आबादी 5 प्रतिशत से अधिक लोग शामिल नहीं हैं, फिर भी 1907 से लेकर आज तक हिन्दुओं की एक बड़ी आबादी जो राजद्रोह और दूसरे राजनीतिक अभियोगों के तहत दण्डित होती रही है, वह इस समाज की ही सदस्य रही है।" (शहीदे आजम भगतसिंह की जेल नोटबुक), पृ0 157–158 (प्रकाशक– राहुल फाउण्डेशन, 69, बाबू का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज, लखनऊ–226006, संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण, जनवरी 2009 ई.)}

3. धार्मिक – सम्प्रदायों की आलोचना–

"आजकल हमारे यहाँ सभी धर्मों को बराबर मानने की प्रवृत्ति है। यह निष्कर्ष विभिन्न धर्मों की तुलना करके नहीं निकाला गया वरन यह एक तरह का पूँजीवादी उदारवाद है। सब लोग खुश रहो और आपस में लड़ाई–झगड़ा मत करो। कौन बहस में पड़े? इसके अलावा हमें वोट भी लेने हैं। अगर एक सम्प्रदाय के लोग हमारी आलोचना से नाराज़ हो गए तो हमें वोट न मिलेंगे। यह नीति लोगों के विवेक को जागृत करने मे बाधक होती है। राममोहन राय के ज़माने से ही नहीं बल्कि उससे पहले, अकबर के ज़माने में धर्मों को लेकर जो वाद–विवाद होता था, वह 20वीं सदी में समाप्त हो गया। इसलिए राममोहन राय जब कहते हैं कि ज्ञान का प्रसार होना चाहिए और इस तरह होना चाहिए कि एक धर्म की तुलना दूसरे धर्म से की जाए – By Comparing One Religion with another तो उनकी यह बात आज के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है। जब तक हम विभिन्न धर्मों को आलोचनात्मक निगाह से न देखेंगे, तब तक हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार न कर सकेंगे। जो सम्प्रदायवादी हैं, ये तो अन्धविश्वासों को जगाते ही हैं, जो पूँजीवादी दल हैं, अपने को राष्ट्रवादी कहते हैं, वे इसके बारे में चुप रहते हैं और सोचते हैं कि दोनों धर्मों के अन्धविश्वासों को मिला दिया जाए तो इससे ज्ञान प्राप्त हो जाएगा। वामपक्ष से आशा की जा सकती है कि वह धर्मों की आलोचना करें इनमें कुछ लोग जो अति वामपंथी विचारधारा के हैं वे धर्मों को ऐतिहासिक दृष्टि से नहीं देखते। उनके विकास के और उतार चढाव के कौन से कारण हैं और जो शासक वर्ग है और जो शोषित जनता है, इनके धार्मिक विचारों में क्या अन्तर है, इन सब बातों की ओर ध्यान नहीं देते बल्कि सारे दर्शन को, सारे धर्म को, समस्त पुराने साहित्य को, सामन्तवाद की देन कहकर एक तरफ हटा देते हैं। दूसरी तरफ ऐसे वामपंथी लोग हैं जो पूँजीवादी पार्टियों की तरह धर्म के मामले में चुप रहते हैं। ....लोग कहते हैं, भारत में बहुत से धर्म हैं, इनका सह अस्तित्व बहुत दिनों से बना रहा है और ऐसा ही बना रहना चाहिए। लेकिन धार्मिक अन्धविश्वासों का सह–अस्तित्व देश के लिए हानिकारक है। उन अन्धविश्वासों का खण्डन करना चाहिए, तभी देश प्रगति कर सकता है।. .... आज के जमाने में तो किसी हिन्दू के लिए इस्लाम की आलोचना करना अत्यन्त कठिन हो गया है। किन्तु कबीर ने जिस तरह मुल्लाओं के अन्धविश्वासों की आलोचना की है, उसे देखते हुए फिर कहना पड़ता है कि वह ज़माना अधिक प्रगतिशील था। राममोहन राय के बाद निर्भीक होकर स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सभी धर्मो की आलोचना की थी। उन्होंने केवल इस्लाम की आलोचना की थी, ऐसा समझना ग़लत है। इस्लाम की आलोचना करना अपेक्षाकृत सरल था, सनातन धर्म की आलोचना करना अधिक कठिन था। हिन्दुओं में जो अन्धविश्वास थे, उनकी अत्यन्त प्रखर आलोचना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने की थी। स्वामी दयानन्द सरस्वती और राजा राममोहन राय दोनों ने एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास किया जिसे आज अपनाने की ज़रूरत है। खास तौर से राजा राममोहन राय ने ईसाइयत की जो आलोचना की है, उसके कुछ अंश संकलित करके प्रकाशित कर देना चाहिए। इससे लोग सीखेंगे कि धर्म को किस दृष्टि से देखना चाहिए, उसके चमत्कारों को अपनाना चाहिए या छोड़ देना चाहिए। इस तरह वे केवल एक धर्म नहीं, अन्य धर्मों के विश्वासों की भी आलोचना करना सीखेगें।" **{रामविलास शर्मा, भारतीय सहित्य की भूमिका (8वाँ अध्याय–राजा राममोहन राय और बंगाल का नवजागरण), पृ. 314–315}** हिन्दू धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों में प्रचलित पौत्तलिक उपासना (मूर्तिपूजा) तथा बाह्य आडम्बरों एवं घृणित प्रथाओं के ज़ोरदार खण्डन के बावजूद स्वामी दयानन्द आर्यसमाज को ब्राह्म समाज के तुल्य हिन्दू समाज के व्यापक संगठन से सर्वथा पृथक् कर उसे सीमित दायरे में बन्द कर देने के पक्षपाती नहीं थे, किन्तु साथ ही वे यह भी चाहते थे कि आर्य समाजियों के क्रान्तिकारी और प्रगतिगामी व्यक्तित्त्व का निश्चित प्रभाव भी हिन्दू समाज पर पड़ता रहे। डॉ. जॉर्डन्स के इस निष्कर्ष' से हम पूर्णतः सहमत हैं। **{जे.टी.एफ. जॉर्डन्स, दयानन्द सरस्वती : हिज लाइफ एण्ड आइडियाज, पृ. 284–295 (आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 1978)}**

क्रमशः

अध्यापक आवास, स्टेशन रोड,
अमेठी, (उत्तर प्रदेश)–227405
मो. 7303474301

अहमस्मि (मैं हूँ)

● पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

यदि मनुष्य को किसी बात का पक्का निश्चय है तो वह यह विश्वास है कि 'मैं हूँ'। आप किसी भी विषय पर सन्देह कर सकते हैं, किन्तु 'अपने होने' में आप को सन्देह नहीं हो सकता। यदि आप को इस में भी सन्देह होने लगा तो आप अपने मस्तिष्क की शुद्धि पर सन्देह करने लगेंगे। अपने होने का ज्ञान किसी तर्क वितर्क पर आश्रित नहीं है। यह स्वसंवेद्य अर्थात् स्वतःसिद्ध है।

डेकार्ट ने कहा है–Cogito ergo sum अर्थात् 'चूँकि मैं सोचता हूं इस वास्ते मैं हूँ।' मेरे विचार में यह प्रत्यक्ष विश्वास नहीं है। यह अनुमान है। डेकार्टे विचारने की क्रिया से अपने होने का अनुमान करता है, किन्तु यह पूर्णतया मनोवैज्ञानिक नहीं है। यह विचार तभी तर्कानुमोदित बनता है, जब मनुष्य विचारने की क्रिया और अपने विचारों का विश्लेषण करने लगता है। सचमुच, मन की सारी क्रियाओं–विचारों, इच्छाओं और भावनाओं के मूल में अपनी सत्ता अथवा अपने होने का विश्वास है। मेरी विचार क्रिया मेरी सत्ता पर आश्रित है, न कि इस से उलट, अर्थात् मेरी सत्ता मेरी विचार क्रिया पर आश्रित नहीं है। यदि 'मैं अहम्' न हो तो कोई विचार ही नहीं हो सकता। **चेतनाधारा सत्य असत्य, यथार्थ अयथार्थ, भले बुरे से पहले ही विद्यमान हाती है।** **{Radhakrishanan's Indian Philosophy Vol II P. 476.}**

'समस्त प्रमाणों का आधारभूत आत्मानुभव स्वतः प्रमाण है, अतः आत्मा की सत्ता के सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं।'

'जब मैं जानता हूं' तो उस जानने का कोई विषय होता है। अर्थात् मैं उस विषय का ज्ञाता हूं। मैं वह सत्ता वाला–सत् हूं, जो ज्ञाता है। यह ज्ञान मुझ पर अवलम्बित है, मेरी सत्ता उस ज्ञान के आधीन नहीं है। "समझ–बुद्धि का होना और उसके कार्यों का होना अपने से पूर्व विद्यमान ज्ञानाधार 'आत्मा' की सत्ता की कल्पना करते हैं। यह आत्मा उन से भिन्न है, यह स्वतः सिद्ध स्वयम्भू है, और बुद्धि आदि उस के साधन हैं।" **{सुरेश्वर कृतवार्तिक PP 189-542, 791-795 quoted by Radhakrishanan.}**

चाहे कोई कितना ही अपठित क्यों न हो, उसे अपनी सत्ता पर सन्देह नहीं होता। पशुओं तक को अपनी सत्ता का विश्वास होता है और वे इस से चिमटे रहते हैं। तब **प्रश्न होता है कि ऐसा सुप्रतिष्ठित एवं स्वतःसिद्ध निर्विवाद सत्य विवादास्पद क्यों बनाया जाए।** इसका उत्तर यह है, कि जब हमने आत्मा के स्वभाव की जांच आरम्भ की तो हम ने भूल की। हम ने वृक्ष की शाखाओं को वृक्ष की जड़ का आधार समझा। **जहां निपट अज्ञानी सीधा चलता रहा, दार्शनिक ज्ञानी ठोकर खा बैठे** क्योंकि 'स्वभाव के विश्लेषण की धुन में वे किसी और वस्तु को पकड़ बैठे और 'स्वभाव' उन के हाथ से निकल गया। डेकार्ट के 'अपनी सत्ता का आधार विचार' सिद्धान्त ने ह्यूम को अपनी सत्ता से इनकार करने पर तैयार किया। वह (ह्यूम) कहता है–"कुछ दार्शनिक यह कल्पना करते हैं कि हम हर घड़ी 'आत्मतत्त्व' के गहरे सम्पर्क में रहते हैं, और हम इस की सत्ता तथा इसकी सत्ता के नैरन्तर्य्य को अनुभव करते हैं और इसकी पूर्ण प्रत्यभिज्ञा और सादगी के विषय में, प्रमाणों से निरपेक्ष होकर भी विश्वास करते हैं......किन्तु मेरी अवस्था यह है कि मैं उस में जिसे 'आत्मा या मेरी सत्ता' कहा जाता है जब तादात्म्य भाव से प्रवेश करता हूं, तब मैं किसी न किसी अनुभूति–यथा–शीत या उष्ण, प्रकाश या अन्धकार, राग या द्वेष, दुःख या सुख से टकरा जाता हूँ। मैं इन अनुभूतियों के अतिरिक्त 'अपने आत्मा' को कभी ग्रहण नहीं कर पाता और अनुभूति के अतिरिक्त किसी वस्तु का साक्षात्कार नहीं कर पाता।" **{Hume's Treatise of Human Nature Book 1, Part IV : 6 (P- 251)}**

ह्यूम का निष्कर्ष–

कितनी दयनीय दशा है। ह्यूम 'अपने आत्मा' 'अपने आपा' को पकड़ना चाहता है किन्तु किसी और वस्तु से टकरा जाता है, आत्मा सदा उसके हाथ से निकल जाता है। सच बात यह है कि आत्मा तो स्वयम्भू–स्वतःसिद्ध है किन्तु डेकार्ट ने इसे विचार– ज्ञान के आधार से सिद्ध करना चाहा। 'ह्यूम' को उसके चरण–चिह्नों पर चलते हुए भान हुआ, कि विचार या विचार के तत्त्व 'आत्मा' नहीं। देखिये उसका विश्लेषण–"किन्तु, इस प्रकार के कुछ अध्यात्मवादियों की बात छोड़कर मैं मनुष्यमात्र के सम्बन्ध में कहने का साहस करता हूँ वे भिन्न भिन्न अनुभूतियों के समूह या ढेर के अतिरिक्त कुछ नहीं, वे विचार कल्पनातीत शीघ्रता से एक के पीछे दूसरा आते हैं, और निरन्तर प्रवाहित और गतिमान् हैं। मन एक प्रकार की रंगशाला (Theatre) है, जहां नाना अनुभूतियां क्रमशः दर्शन देतीं, चली जातीं, फिर जातीं, खिसक जातीं और अनन्त प्रकार की स्थितियों में मिल जाती हैं। किसी एक समय में इन में कोई सादगी नहीं है और न ही किसी दूसरे समय में सत्ता=Identity है। चाहे उस सादगी और सत्ता की कल्पना करने में हमारी कैसी ही रुचि क्यों न हो। रंगशाला की उपमा से हमें भ्रम नहीं होना चाहिए। वे क्रमिक अनुभूतियां ही हैं, वही मन है। हमें यह सुदूर की कल्पना भी नहीं कि कोई ऐसा आधार है, जहां ये दृश्य होते हैं, और कि कोई ऐसी सामग्री है, जिस से इनका निर्माण होता है। **{Hume's Treatise of Human Nature.}**

ह्यूम कैसे भ्रमित हो गया ?

'ह्यूम का यह कथन क्या उस मनुष्य के सदृश्य नहीं है, जिसने नदी को पकड़ने के लिए उसकी लहरों को पकड़ने का यत्न किया, किन्तु सफल न होने पर नदी की सत्ता से ही इन्कार कर बैठा। ह्यूम ने आत्मा को अपने हाथ से पकड़ना चाहा, किन्तु जब उस का हाथ आत्मा से नहीं वरन् किसी कठोर या नरम वस्तु से टकराया तो उसने आत्मा की सत्ता से ही इन्कार कर दिया। उस ने आत्मा को आँखों से देखना चाहा, किन्तु जब उसकी आँखें, आत्मा से नहीं वरन् किसी रूप या दृश्य से टकरायीं तो वह आत्म–सत्ता से ही इन्कार कर गया। उसने आत्मा को कानों से सुनना चाहा, किन्तु जब उसके कान किसी शब्द से, न कि किसी आत्मा से टकराये तो वह आत्मा की सत्ता से ही इन्कार कर बैठा। उसने आत्मा को मन से ग्रहण करना चाहा। किन्तु जब उसका मन आत्मा से नहीं वरन् किसी विचार या अनुभूति से टकराया, तब वह कह उठा कि अनुभूतियों के ढेर के परे आत्मा के समान सत्ता और सादगी वाली कोई वस्तु नहीं है। पहले तो वह उत्तेजना में आकर मन को एक रंगशाला कहता है जिस में नाना विचार क्रम से दर्शन देते चले जाते. फिर जाते. खिसक जाते और नाना प्रकार की अवस्थाओं में मिल जाते हैं। मानो वह नदी का पेटा है, जिससे जलधारा बह रही है। किन्तु शीघ्र ही वह अपने को अपने जाल में फंसा अनुभव करता है, और अपने संशयात्मा सिद्धान्त के साथ एकरसता रखने के लिए इस प्रकार कहने लगता है कि, 'रंगशाला की उपमा से हमें भ्रम नहीं होना चाहिए।' क्योंकि 'उसे जहाँ ये दृश्य हो रहे हैं, उस स्थान की सुदूर कल्पना भी नहीं है।' चूंकि उसे स्थान की कल्पना नहीं है, इस वास्ते वह उस स्थान की सत्ता से ही इन्कार कर देता है। उसे दृश्यदर्शन तो होता है किन्तु वह दृश्यों में ऐसा उलझा है, कि वह उस स्थान को, जहां ये दृश्य घटित होते हैं, भूल जाता है। उसके मत में दृश्य तो हैं, किन्तु कहीं नहीं, अर्थात् आधार के बिना हैं। क्योंकि स्थान नामक पदार्थ ही जब नहीं तो कहाँ का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। ह्यूम अपनी मानसिक अवस्था अथवा अपने निजी स्वभाव की उपेक्षा कर जाता है।

वह क्या वस्तु है, जो उसे बार बार 'मैं' का प्रयोग करने पर विवश करती है। **'मैं' यह करता हूँ, 'मैं' वह करता हूँ। यह 'मैं' है क्या ? विचारों का ढेर मात्र !** सर्वथा नहीं 'विचार तो विचारने से होता है, विचारक–विचारने वाला विचार नहीं है। ह्यूम कहता है कि–

"यदि कोई पक्षपात छोड़कर गम्भीरता से विचार करे और उसे **अपने आपकी अनुभूति** हो तो मैं उससे झगड़ना नहीं चाहता। मैं इतना कह सकता हूँ कि सम्भव है वह ठीक हो जैसा कि मैं ठीक हूँ या हमारी प्रकृति इस विषय में भिन्न–भिन्न हो। सम्भवतः उसके मन में उस **स्थायी तत्त्व** के विषय में विचार उठते हों (May Perceive) जिसको वह आत्मा कहता है परन्तु **मुझे निश्चय** यह है कि मेरे भीतर कोई ऐसी वृत्ति नहीं है। "

पाठकों से हम इन सन्दर्भों को विशेषकर जिन वाक्यों में स्थूलाक्षर शब्द हैं, बार–बार पढ़ने और इनका अभिप्राय समझने का यत्न करने का अनुरोध करेंगे। **'मुझे निश्चय है'** इस दृढ़ धारणा पर ध्यान दीजिये। किसका निश्चय ? अपने मैं–पन–अहंता के निश्चय का निश्चय ! क्या इस सिद्धान्त से स्वयं ह्यूम को सन्तोष होता है ? उसी से उस के शब्दों में सुनिए–

ह्यूम का अनुताप–

"सौभाग्य की बात है कि जब तर्क इस सन्देह को दूर नहीं कर सकता तो प्रकृति इस को ठीक कर देती है, और मेरा दार्शनिक कष्ट या

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

मुक्ति के साधन

{महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ-प्रकाश के महत्त्वपूर्ण अंश, संकलक : भावेश मेरजा}

प्रश्न—मुक्ति के क्या—क्या साधन हैं ? मुक्ति और बन्ध किन—किन बातों से होते हैं ?

उत्तर—परमेश्वर की आज्ञा पालना; अधर्म, अविद्या, कुसङ्ग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहना; और सत्यभाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपातरहित न्याय, धर्म की वृद्धि करना; पूर्वोक्त प्रकार से परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करना; विद्या पढ़ना—पढ़ाना; और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करना; इन में भी सबसे उत्तम साधन उपासना अर्थात् जिसका नाम योगाभ्यास है उसको करना; और जो कुछ करे वह सब पक्षपातरहित न्याय—धर्मानुसार ही करे, इत्यादि साधनों से मुक्ति होती है; और इनसे विपरीत ईश्वराज्ञा—भंग करना आदि कामों से बन्ध होता है।

मुक्ति के कुछ साधन तो लिख आये हैं, परन्तु विशेष उपाय ये हैं जो मुक्ति चाहे वह 'जीवन—मुक्त' अर्थात् जिन मिथ्याभाषणादि पाप—कर्मों का फल दुःख है उनको छोड़, सुखरूप फल को देनेवाले सत्यभाषणादि धर्माचरण अवश्य करे। जो कोई दुःख को छुड़ाना और सुख को प्राप्त होना चाहे, वह अधर्म को छोड़, धर्म अवश्य करे; क्योंकि दुःख का पापाचरण और सुख का धर्माचरण मूल कारण है।

1. विवेक

विवेक — सत्पुरुषों के संग से विवेक अर्थात् सत्य—असत्य, धर्म—अधर्म, कर्त्तव्य—अकर्त्तव्य का निश्चय अवश्य करें, उनको पृथक्—पृथक् जानें; और 'शरीर' अर्थात् जीव—पंच कोशों का विवेचन करें।

पंचकोश — **(1) अन्नमयकोश** — जो त्वचा से लेकर अस्थि—पर्यन्त का समुदाय पृथिवीमय है। **(2) प्राणमय कोश** — जिसमें 'प्राण' अर्थात् जो भीतर से बाहर जाता, 'अपान' जो बाहर से भीतर आता, 'समान' जो नाभिस्थ होकर सर्वत्र शरीर में रस पहुँचाता, 'उदान' जिससे कण्ठस्थ अन्न—पान खैंचा जाता और बल—पराक्रम होता है, 'व्यान' जिससे सब शरीर में चेष्टा आदि कर्म जीव करता है। **(3) मनोमय कोश** — जिसमें मन के साथ अहङ्कार, वाक्, पाद, पाणि, पायु और उपस्थ पाँच कर्म—इन्द्रियाँ हैं। **(4) विज्ञानमय कोश** — जिसमें बुद्धि, चित्त, श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा और नासिका ये पांच ज्ञान—इन्द्रियाँ हैं, जिनसे जीव ज्ञानादि व्यवहार करता है। **(5) आनन्दमय कोश** — जिसमें प्रीति, प्रसन्नता, न्यून—आनन्द, अधिक—आनन्द, ब्रह्म—आनन्द और उसका आधार—रूप = कारण—रूप प्रकृति (कारण—शरीर) है। ये 'पांच कोष' कहाते हैं। इन्हीं से जीव सब प्रकार के कर्म, उपासना और ज्ञानादि व्यवहारों को करता है।

तीन अवस्थायें—(1) जागृत, (2) स्वप्न और (3) सुषुप्ति—ये तीन अवस्थायें हैं।

तीन शरीर हैं—(1) स्थूल शरीर—जो यह दीखता है। **(2) सूक्ष्म शरीर**—पांच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच सूक्ष्म—भूत और मन तथा बुद्धि इन सत्तरह तत्त्वों का समुदाय 'सूक्ष्म शरीर' कहाता है। यह सूक्ष्म शरीर जन्ममरणादि में भी जीव के साथ रहता है। इसके दो भेद हैं — **(1) भौतिक** — अर्थात् जो सूक्ष्म भूतों के अंशों से बना है। **(2) स्वाभाविक शरीर** — जो जीव के स्वाभाविक गुण—रूप है। यह दूसरा स्वाभाविक शरीर = अभौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है। **(3) कारण शरीर** — जिसमें सुषुप्ति अर्थात् गाढ़ निद्रा होती है, वह प्रकृति—रूप होने से सर्वत्र विभु और सब जीवों के लिए एक है। (4) (किन्हीं के मत में इसका एक अन्य भेद) **तुरीय शरीर** — वह कहाता है कि जिसमें समाधि से परमात्मा के आनन्द— स्वरूप में जीव मग्न होते हैं। इसी समाधि—संस्कारजन्य 'शुद्ध शरीर' का पराक्रम मुक्ति में भी यथावत् सहायक रहता है।

इन सब कोषों और अवस्थाओं से जीव पृथक् है। क्योंकि जब मृत्यु होती है, तब सब कोई कहते हैं कि जीव निकल गया। यही जीव सबका प्रेरक, सबका धर्त्ता, साक्षी, कर्त्ता, भोक्ता कहाता है। जो कोई ऐसा कहे कि जीव कर्त्ता—भोक्ता नहीं, तो जानो कि वह अज्ञानी, अविवेकी है; क्योंकि विना जीव के जो ये सब जड़ पदार्थ हैं, इनको सुख—दुःख का भोग वा पाप—पुण्य—कर्तृत्व कभी नहीं हो सकता। हां, इनके सम्बन्ध से जीव पुण्य—पापों का कर्त्ता और सुख—दुःखों का भोक्ता है।

इन सब कोषों और अवस्थाओं से जीव पृथक् है। क्योंकि जब मृत्यु होती है, तब सब कोई कहते हैं कि जीव निकल गया। यही जीव सबका प्रेरक, सबका धर्त्ता, साक्षी, कर्त्ता, भोक्ता कहाता है। जो कोई ऐसा कहे कि जीव कर्त्ता-भोक्ता नहीं, तो जानो कि वह अज्ञानी, अविवेकी है; क्योंकि विना जीव के जो ये सब जड़ पदार्थ हैं, इनको सुख-दुःख का भोग वा पाप-पुण्य-कर्तृत्व कभी नहीं हो सकता। हां, इनके सम्बन्ध से जीव पुण्य-पापों का कर्त्ता और सुख-दुःखों का भोक्ता है।

जब इन्द्रियाँ अर्थों में, मन इन्द्रियों और आत्मा मन के साथ संयुक्त होकर प्राणों को प्रेरणा करके अच्छे वा बुरे कर्मों में लगाता है, तभी वह बहिर्मुख हो जाता है। उसी समय भीतर से अच्छे कर्मों में आनन्द, उत्साह, निर्भयता और बुरे कर्मों में भय, शंका, लज्जा उत्पन्न होती है, वह अन्तर्यामी परमात्मा की शिक्षा है। जो कोई इस शिक्षा के अनुकूल वर्तता है, वह मुक्तिजन्य सुखों को प्राप्त होता है। और जो विपरीत वर्तता है, वह बन्धजन्य दुःख भोगता है।

2. वैराग्य

वैराग्य अर्थात् जो विवेक से सत्य—असत्य को जाना हो, उसमें से सत्य—आचरण का ग्रहण और असत्य—आचरण का त्याग करना। विवेक यह है कि जो पृथिवी से लेकर परमेश्वर—पर्यन्त पदार्थों के गुण—कर्म—स्वभाव से जानकर परमेश्वर की आज्ञा का पालन और उपासना में तत्पर होना, उससे विरुद्ध न चलना। सृष्टि से उपकार लेना भी विवेक कहाता है।

3. षट्क सम्पत्ति

षट्क सम्पत्ति अर्थात् छः प्रकार के कर्म करना। एक **'शम'** जिससे अपने आत्मा और अन्तःकरण को अधर्माचरण से हटाकर, धर्माचरण में सदा प्रवृत्त रखना। दूसरा **'दम'** = जिससे श्रोत्रादि इन्द्रियों और शरीर को व्यभिचारादि बुरे कर्मों से हटाकर, जितेन्द्रियत्वादि शुभ कर्मों में प्रवृत्त रखना। तीसरा **'उपरति'** = जिससे दुष्ट कर्म करनेवाले पुरुषों से सदा दूर रहना। चौथा **'तितिक्षा'** = चाहे निन्दा—स्तुति, हानि— लाभ कितना ही क्यों न हो, परन्तु हर्ष—शोक को छोड़, मुक्ति—साधनों में सदा लगे रहना। पाँचवां **'श्रद्धा'** = जो वेदादि सत्य शास्त्रों और इनके बोध से पूर्ण आप्त विद्वान्, सत्योपदेष्टा महाशयों के वचनों पर विश्वास करना। छठा **'समाधान'** = चित्त की एकाग्रता। ये छः मिलकर एक 'साधन' तीसरा कहाता है।

4. मुमुक्षुत्व

मुमुक्षुत्व अर्थात् जैसे क्षुधा तृषातुर को सिवाय अन्न—जल के दूसरा कुछ भी अच्छा नहीं लगता, वैसे विना मुक्ति के साधन और मुक्ति के, दूसरे में प्रीति न होना। ये चार साधन हैं।

अनुबन्ध चतुष्टय

और चार अनुबन्ध अर्थात् साधनों के पश्चात् ये कर्म करने होते हैं— **(1) अधिकारी**—इनमें से जो इन चार साधनों से युक्त पुरुष होता है, वही मोक्ष का अधिकारी होता है। **(2) सम्बन्ध** — ब्रह्म की प्राप्तिरूप मुक्ति—प्रतिपाद्य और वेदादि—शास्त्र—प्रतिपादक को यथावत् समझकर अन्वित करना। **(3) विषय** — सब शास्त्रों का प्रतिपादन विषय ब्रह्म, उसकी प्राप्तिरूप विषयवाले पुरुष का नाम विषयी है। **(4) प्रयोजन** — सब दुःखों की निवृत्ति और परमानन्द को प्राप्त होकर मुक्ति—सुख का होना। ये चार 'अनुबन्धश कहाते हैं।

श्रवण—चतुष्टय

तदनन्तर श्रवण—चतुष्टय — **(1) श्रवण** — जब कोई विद्वान् उपदेश करे तब शान्त हो, ध्यान देकर सुनना। विशेषतः ब्रह्मविद्या के सुनने में अत्यन्त ध्यान देना चाहिये, क्योंकि यह सब विद्याओं में सूक्ष्म विद्या है। उसको सुनकर **(2) मनन** — एकान्त में बैठके सुने हुए का विचार करना, जिस बात में शङ्का हो उसको पुनः पूछना, और सुनते समय भी वक्ता और श्रोता उचित समझें तो पूछना और समाधान करना। **(3) निदिध्यासन** — जब सुनने और मनन करने से निःसन्देह हो जाय तब समाधिस्थ होकर उस बात को ध्यान—योग से देखना—समझना कि वह जैसा सुना या विचारा था, वैसा है वा नहीं। **(4) साक्षात्कार** — अर्थात् जैसा पदार्थ का स्वरूप, गुण और स्वभाव हो, वैसा याथातथ्य से जान लेना। यह 'श्रवण—चतुष्टय' कहाता है।

अन्य साधन

सदा 'तमोगुण' अर्थात् क्रोध, मलिनता, आलस्य, प्रमाद आदि;

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

गतांक से आगे...

विदुर जी की दृष्टि में बुद्धिमान् कौन ?

● प्रो. राम प्रसाद वेदालंकार

3. न किंचिदवमन्यन्ते

विदुर जी कहते हैं—बुद्धिमान् मनुष्यों का तीसरा लक्षण यह है कि वे किसी को तुच्छ समझकर उसकी उपेक्षा नहीं करते, क्योंकि वे यह समझते हैं कि जिसे हम आज तुच्छ समझते हैं कल वह एक बहुत बड़ा व्यक्ति बन सकता है, जिसको आज हम कुछ नहीं अनुभव करते कल वह बहुत बड़े पद पर पहुँच सकता है, बहुत बड़ा नेता बन सकता है, इत्यादि। यमुनानगर वैदिक साधन आश्रम में एक नेपाल का छात्र था जो हर दृष्टि से टेढ़ा था, परन्तु आश्रम का जब फ्यूज उड़ जाता था या कोई और विद्युत सम्बन्धी खराबी हो जाती थी तो झट वह ठीक—ठाक करके सब को सुख पहुँचा देता था। उसके सम्बन्ध में एक उच्च कक्षा वाला छात्र कहता था, "कभी—कभी खोटा पैसा भी बड़े काम आ जाता है।" 'जहाँ काम आए सुई का करे तलवार' वाली कहावत के अनुसार जहाँ पर सुई काम आती है वहाँ हजार प्रयत्न करने पर भी तलवार काम नहीं आ सकती अतः प्रत्येक वस्तु का यथोचित्त मूल्यांकन करना ही बुद्धिमानों का कार्य है। एक व्यक्ति को अपना ही अभिभावक कहता है कि—"तुम्हें बाहर कोई सौ रुपये पर भी नहीं रखेगा, इन विद्वानों के भाषण सुन—सुनकर तू वैसे ही पागल हो रहा है। जब तू घर से बाहर निकलेगा तो तुम्हें एक समय के भोजन के लिये भी कोई नहीं पूछेगा, इत्यादि।" उन्हें क्या पता था कि वह व्यक्ति भी कभी इतना बड़ा बन सकता है कि जिसके नीचे बैठकर केवल वे स्वयं ही उपदेश नहीं सुनेंगे, बल्कि बड़े—बड़े लोग भी इसके उपदेशों के सुनने में अपना अहोभाग्य समझेंगे और अपना जीवन बनाने का प्रयास करेंगे। इनसे एक—एक दिन के उपदेश सुनने के लिए लोग हाथ जोड़े हुए प्रार्थना करेंगे, पत्रों द्वारा समय माँगेंगे। इधर उसे जो आर्थिक दृष्टि से अपनी योग्यता पर गर्व था जिसके कारण वह धन कमाकर रोजी— रोटी चलाने में समर्थ था, उसे क्या पता था कि सांसारिक दृष्टि से, अर्थात् आर्थिक दृष्टि से भी उसकी कभी इतनी अच्छी स्थिति होगी कि जिसके सम्मुख कभी उन्हें भी हीन भावना का अनुभव होगा।

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज ने जब गेरुए वस्त्र धारण करके संन्यास ले लिया तो उनके पूज्य पिता जी उनको कोसते हुए कहते हैं—"तू मंगता बनकर स्थान—स्थान पर मुझे बदनाम करेगा।" पर उन्हें क्या मालूम था कि—"जिसे मैं आज तुच्छ व्यक्ति समझ रहा हूँ, कभी ऐसा भी समय आयेगा कि इसके सम्मुख मैं अपने को तुच्छ समझकर अपनी पगड़ी उतार कर इनके चरणों पर रखने में भी अपना अहोभाग्य समझूँगा।" इसलिये बुद्धिमान् किसी को तुच्छ नहीं समझता क्योंकि वह जानता है कि आज जिस को मैं अपना शत्रु समझता हूँ, सम्भव है जीवन की दुःखद घड़ियों में वह ही हमारे मुख में जल की दो बूँदें डालकर हमें जीवन प्रदान करने वाला हो। कई बार एक पुत्र को जिस को हम बिल्कुल तुच्छ एवं नगण्य समझते हैं,समय पड़ने पर वही हमारी सेवा—शुश्रूषा करने में कमाल कर दिखाता है। यमुनानगर वैदिक साधन आश्रम में जिस छात्र को प्रायः तुच्छ समझा जाता था, वह सब से आगे बढ़कर रहा। सभी अपने पर गर्व करते थे, पर कौन जानता था कि जिसे हम हीन समझते हैं, वही पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी की जी—जान से सेवा करेगा और वही उनके देहावसान के अनन्तर सब के मध्य में उनके जीवन चरित्र की सामग्री एकत्रित करने और उसको सम्पन्न करने के लिये व्रत लेगा, तथा जब तक वह, वह कार्य पूर्ण नहीं कर लेगा, कोई अन्य कार्य ही नहीं करेगा। ऐसे ही अन्य व्यक्तियों को जिन्हें बहुत सामान्य समझा जाता है, कौन जानता है कि वे उनसे भी कभी आगे निकल जायेंगे। कौन जानता था, जिस व्यक्ति से हम गौएँ चरवा रहे हैं, वही सदा क्लासों में सर्वप्रथम आया करेगा। इन सब अनुभवों को जगत् में देख—देख कर ही तो बुद्धिमान् जन किसी को भी तुच्छ नहीं समझते और न ही किसी की उपेक्षा और अवहेलना करते हैं।

अब यदि हम विदुर जी के उपर्युक्त श्लोक के अनुसार यथाशक्ति अपने सब व्यवहार करना चाहेंगे और यथाशक्ति ही करेंगे, अपने जीवन में कभी भी किसी को हेय, तुच्छ या नगण्य नहीं समझेंगे, तो फिर निःसन्देह विदुर जी की दृष्टि में हम भी बुद्धिमानों की श्रेणी में खड़े हो सकेंगे और बुद्धिमान्—समझदार—अकलमन्द कहलाने के अधिकारी बन सकेंगे। प्रभु हमें सामर्थ्य प्रदान करे जिससे कि हम भी ऐसे बुद्धिमान् बन सकें, ऐसे समझदार सिद्ध हो सकें।

'महान् विदुर के महान् उपदेश' से साभार

☞ पृष्ठ 06 का शेष

मुक्ति के साधन

'रजोगुण' अर्थात् ईर्ष्या, द्वेष, काम, अभिमान, विक्षेप आदि दोषों से अलग होके 'सत्त्व' अर्थात् शान्त प्रकृति, पवित्रता, विद्या, विचारशीलता आदि गुणों को धारण करे।

(मैत्री) सुखी जनों से मित्रता, (करुणा) दुःखी जनों पर दया, (मुदिता) पुण्यात्माओं से हर्षित होना, (उपेक्षा) दुष्टात्माओं में न प्रीति और न वैर करना। {**मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखादुःखापुण्यापुण्यविषयाणां भावनातश्चित्तप्रसादनम्।** (योग दर्शन 1.33)}

नित्यप्रति न्यून से न्यून दो घण्टा—पर्यन्त मुमुक्षु ध्यान अवश्य करे, जिससे भीतर के मन आदि पदार्थ साक्षात् हों।

देखो, हम चेतन—स्वरूप हैं; इसी से ज्ञान—स्वरूप और मन के साक्षी हैं; क्योंकि जब मन शान्त, चंचल, आनन्दित वा विषादयुक्त होता है, उसको यथावत् देखते हैं। वैसे ही इन्द्रियों, प्राणों आदि के ज्ञाता, पूर्वदृष्ट के स्मरणकर्त्ता और एक काल में अनेक पदार्थों के वेत्ता, धारण—आकर्षण—कर्त्ता और सबसे पृथक् हैं। जो पृथक् न होते तो स्वतन्त्र कर्त्ता, इनके प्रेरक, अधिष्ठाता कभी नहीं हो सकते।

अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पंच क्लेशाः। योग दर्शन 2.3

इनमें से अविद्या का स्वरूप कह आये। पृथक् वर्त्तमान बुद्धि को आत्मा से भिन्न न समझना अस्मिता, सुख में प्रीति राग, दुःख में अप्रीति द्वेष, और सब प्राणिमात्र को यह इच्छा सदा रहती है कि 'मैं सदा शरीरस्थ रहूं, मरूं नहीं' इस मृत्यु—दुःख से त्रास अभिनिवेश कहाता है। इन पांच क्लेशों को योगाभ्यास विज्ञान से छुड़ाके, ब्रह्म को प्राप्त होके, मुक्ति के परमानन्द को भोगना चाहिये।

सब जीव स्वभाव से सुख—प्राप्ति की इच्छा करते हैं और दुःख का वियोग होना चाहते हैं; परन्तु जब—तक धर्म नहीं करते और पाप नहीं छोड़ते, तब तक उनको सुख का मिलना और दुःख का छूटना न होगा; क्योंकि जिसका 'कारण' अर्थात् मूल होता है, वह नष्ट कभी नहीं होता। जैसे — **छिन्ने मूले वृक्षो नश्यति तथा पापे क्षीणे दुःखं नश्यति।** = जैसे मूल कट जाने से वृक्ष नष्ट होता है, वैसे पाप को छोड़ने से दुःख नष्ट होता है।

इसी प्रकार सत्त्व, रज और तमोगुण—युक्त वेग से जिस—जिस प्रकार का कर्म जीव करता है, उस—उसको उसी—उसी प्रकार फल प्राप्त होता है। जो मुक्त होना चाहते हैं, वे गुणातीत अर्थात् सब गुणों के स्वभावों में न फसकर, महायोगी होके मुक्ति का साधन करें। क्योंकि —

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।—योग दर्शन 1.2

मनुष्य रजोगुण तमोगुण—युक्त कर्मों से मन को रोक, शुद्ध सत्त्वगुण—युक्त हो, पश्चात् उसका भी निरोध कर, एकाग्र अर्थात् एक परमात्मा और धर्मयुक्त कर्म इनके अग्रभाग में चित्त का ठहरा के रखे। 'निरुद्ध' अर्थात् सब ओर से मन की वृत्ति को रोकना।

तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्।

— योग दर्शन 1.3

जब चित्त 'एकाग्र' और 'निरुद्ध' होता है, तब सबके द्रष्टा ईश्वर के स्वरूप में जीवात्मा की स्थिति होती है।

इत्यादि साधन मुक्ति के लिये करें। और —

अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः। — सांख्य दर्शन 1.1

जो **'आध्यात्मिक'** अर्थात् शरीर—सम्बन्धी पीड़ा, जो **'आधिभौतिक'** जो दूसरे प्राणियों से दुःखित होना, **'आधिदैविक'** जो अतिवृष्टि, अतिताप, अतिशीत, मन—इन्द्रियों की चंचलता से होता है, इस 'त्रिविध दुःख' को छुड़ाकर मुक्ति पाना 'अत्यन्त पुरुषार्थ' है।

प्रश्न — मुक्ति एक जन्म में होती है, वा अनेकों में ?

उत्तर — अनेक जन्मों में। क्योंकि —

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे पराऽवरे।।

— मुण्डक उपनिषद् 2.2.8

जब इस जीव के हृदय की अविद्या—अज्ञानरूपी गांठ कट जाती है, सब संशय छिन्न होते और दुष्ट कर्म क्षय को प्राप्त होते हैं, तभी उस परमात्मा में, जो कि अपने आत्मा के भीतर और बाहर व्याप रहा है, निवास करता है।

मो. 9879528247

गुरुकुल कांगड़ी, गोरी सरकार और महात्मा मुन्शीराम

● डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

हमें इतिहास को देख कर उससे शिक्षा लेनी चाहिए और अपने वर्तमान व भविष्य का निर्माण करना चाहिए। बात उस समय की है जब भारत माता परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी थी, अंग्रेज़ी सरकार का चारों ओर दमन चक्र चल रहा था, गोरी सरकार हिन्दुओं को हेय दृष्टि से देखती थी परन्तु आये समाज अपना कार्य कर रहा था वैदिक धर्म व वैदिक संस्कृति की रक्षा समाज की उन्नति स्वदेश, स्वराज की ओर चलने की भावना अग्रसर थी। सन् 1907 से 1910 तक का समय आर्य समाज के लिए संघर्ष का समय था। गोरी सरकार के गुप्त चर आर्य समाज की जो रिपोर्ट सरकार को दे रहे थे उनमें आर्य समाज को देश में बगावत फैलाने वाली संस्था बताया जाता था, राज द्रोही की संज्ञा दी जाती थी। इन रिपोर्टों के आधार पर ब्रिटिश सरकार आर्यसमाज व आर्य समाजियों को बागी मानने लगी थी।

पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर डेंजिल इब्बटसन के अनुसार पंजाब लगभग सभी मजिस्ट्रेटों ने ऐसी सूचनाऐं दी थीं कि आर्य समाज जहाँ–जहाँ हैं वह राजद्रोह की चर्चा का केन्द्र हैं इसी समय सन् 1907 में लाला लाजपत राय का पंजाब से निर्वासन हो गया। आर्य नेता कहते थे कि आर्य समाज का राजनीति से कोई लेना–देना नहीं आर्य समाज राजनैतिक संस्था नहीं है, परन्तु अंग्रेज़ अधिकारी इस बात को मानने को तैयार नहीं थे। वे आर्यसमाज को राजद्रोही मानते थे। यह सारांश डॉ सत्यकेतु विद्यालंकार की पुस्तक आर्यसमाज का इतिहास से दिया गया है। आर्यसमाज पर सरकारी प्रकोप के कारण आर्यसमाज और राजनीतिक नामक विषय में यह स्पष्ट किया गया है। उस समय इस स्थिति से निपटने में महात्मा मुंशी राम का बहुत बड़ा सहयोग व कार्य रहा। उनकी लिखी पुस्तक 'आर्यसमाज और उसके निंदक' (आर्य समाज एण्ड इट्स डिटेक्टर्स) में लिखा है, कि आर्यसमाज ईसाइयत व इसाई मिशनरियों की आलोचना करता था अतः इसाई मिशनरियों ने आर्यसमाज से बदला लेने की भावना से आर्यसमाज को बदनाम करना आरम्भ कह दिया। शास्त्रार्थ होते थे तो ईसाई उसमें जीत नही पाते थे, आर्यसमाज को हरा नहीं पाते थे अतः सरकार से मिलकर आर्यसमाज को राजद्रोही ठहराने में लगे रहते थे। हालांकि जब से आर्यसमाज की स्थापना हुई विरोध तो तभी से आरम्भ हो गए थे।

उस समय वह दौर था जब आर्य विद्वान् चारों ओर असत्य, अधर्म व अवैदिकता का खण्डन पूरे जोर से तत्परता से कर रहे थे, चाहे वह कोई भी मत–मतान्तर वादी हो, इसाई, मुसलमान, सनातनी पण्डित हो या अन्य कोई हो आर्यसमाज गोरक्षा पर भी अपनी बात कहता था। इन बातों से अनेक मत मतान्तर वादी आर्यसमाज के विरुद्ध हो गए। आर्यसमाज को बदनाम करने का प्रयास करने लगे।

गोरी सरकार की पुलिस सेवा में हिन्दुओं की संख्या बहुत कम थी। अधिकतर मुस्लिम होते थे। सन् 1857 ई. के स्वतन्त्रता संग्राम में अधिकांश क्रान्तिकारी मंगल पाण्डे, झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई जैसे रणबांकुरों, वीरांगनाओं के बाद अंग्रेज़ों ने हिन्दुओं को नौकरी देनी बन्द कर दी थी। उस समय उत्तर प्रदेश को संयुक्त प्रान्त कहते थे।

आर्य समाज ने गोवध को बन्द करने हेतु भी गोरक्षा आन्दोलन चलाया। मांस भक्षण को गलत बताया। उस समय इसाई मिशनरियाँ स्कूल खोले जा रही थीं। इसाई धर्म प्रचारक क्रिश्चियन धर्म का प्रचार करने में लगे हुए थे गरीब हिन्दुओं को अंग्रेज़ अपनी बातों के जाल में फँसाकर धर्म परिवर्तन करा रहे थे। आर्यसमाज इन ईसाई मिशनरियों का पूरे जोर से विरोध करता व शास्त्रार्थ हेतु ललकारता था और जो अन्धविश्वास पाखण्ड फैले थे उनको दूर करने का कार्य कर रहा था।

आत्माराम जैसे व्यक्तियों ने आर्यसमाज का विरोध करना आरम्भ कर दिया। आर्यसमाज मूर्ति पूजा का विरोध कर पाखण्ड व अन्धविश्वासों तथा भारत में फैली अनेक कुरीतियों से लड़ रहा था। आर्यावर्त्त के प्राचीन गौरव का प्रकाश कर रहा था।

केन्द्रीय गुप्तचर विभाग एवं संयुक्त प्रान्त के गुप्तचर विभाग उप पुलिस अधीक्षक सैण्ड्रस ने कुछ ऐसी ही रिपोर्ट सरकार के सामने रखी थीं जिनमें आर्यसमाज के कार्य कलाप राष्ट्रीय भावना, स्वदेशी का प्रचार, देश की एकता, विदेशी वस्तुओं का परित्याग जैसे व्याख्यानों को भी राजद्रोह मान लिया जाता था।

सन् 1907 में लाला लाजपत राय तथा सरदार अजीत सिंह की गिरफ्तारी तथा देश निर्वासन के बाद गुरुकुल पर राजद्रोह का सन्देह किया गया तथा इसी समय ऐसी सूचना दी गई कि गुरुकुल में हथियारों का भण्डार है। ब्रह्मचारियों को शस्त्रास्त्र चलाने की शिक्षा दी जाती है, बम बनाने का कारखाना होने की भी सूचना दी गई। एक डिप्टी कलेक्टर अपने आपको वकील बताकर गुरुकुल में वहाँ की जासूसी करने के उद्देश्य से आए महात्मा मुंशी राम ने उनके पीछे अपने गुप्त पर लगा दिए। रात को वकील अचानक व्यायाम शाला में जा पहुँचे जो ब्रह्मचारी गत–काफरी (मल्ल विद्या) सीखते थे। पीछे–पीछे महात्मा मुंशी राम भी पहुँच गए और कलेक्टर साहब से पूछा 'क्या आपने गुप्त भेदों का पता लगा लिया है?' कलेक्टर पानी–पानी हो गए और गुरुकुल में राजद्रोह जैसी बात होने से मना किया, कहा कि राजद्रोह जैसी यहाँ कोई बात नहीं है।

महात्मा मुंशी राम ने गुरुकुल में हुई भ्रान्तियों का निवारण बड़ी कुशलता से किया। यहाँ बिजनौर के कलेक्टर फोर्ड से मिले। संयुक्त प्रान्त के लैफ्टिनेंट गवर्नर जान हिवेट से मिले। भारत आए चार्ल्स फियर एण्ड्रयूज से मिले। रेमर्ज मेकडोनाल्ड से मिले। उनकी गुरुकुल की यात्रा अत्यन्त संतोष जनक थी। संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन ने भी गुरुकुल की यात्रा की। उन्होंने कहा, "गुरुकुल मेरे आदर्श के अनुरूप शिक्षा संस्था है।"

आर्य समाज का इतिहास (गुरुकुल कांगड़ी पर काली घटा, पृष्ठ 226)

गुरुकुल पर जो राज द्रोह का आरोप लगाया जाता था ब्रिटिश सरकार ऐसी भ्रान्ति से अलग हो गयी। महात्मा मुन्शी राम ने इस हेतु अथक प्रयास किए। उन्होंने गुरुकुल के लिए अत्यन्त सराहनीय कार्य किया। स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती की उन यादों के लिए वही गुरुकुल विश्व में वेद का प्रकाश कर रहा है।"

खुर्जा
मो. 8979794715

☞ पृष्ठ 05 का शेष

अहमस्मि (मैं हूँ)

भ्रम इस सन्देहात्मक वृत्ति के ढीला होने से किसी इन्द्रिय जन्य संस्कार के कारण धुल जाता है। मैं खाना खाता हूँ, मित्रों के साथ बातचीत तथा मनोविनोद करता हूँ, और जब तीन चार घण्टों के मनोविनोद के पश्चात् फिर दार्शनिक विचारों में संलग्न होता हूँ तो वे विचार ऐसे फीके, अस्वाभाविक और निरर्थक प्रतीत होते हैं कि आगे बढ़ने को जी नहीं चाहता। **{Bk I, IV, 7 (a condensed quotation, taken from Atkin's Philosophy of Hume Vide Roger's A Student's History of Philosophy P. 382.}**

यह स्वच्छ और सीधा साधा अनुपात मूर्छित, काल्पनिक एवं उपहासास्पद दार्शनिक विचार– धारा का अनुपात है जिसे ह्यूम ने निर्माण करने का प्रयत्न किया, और जो अन्त में जड़ और शुष्क, क्लिष्ट कल्पना के अतिरिक्त कुछ न बनी। यह सचमुच उसका सौभाग्य था, कि दैव–प्रकृति माता की ममता के साथ उसकी रक्षा करने को आई और उसे संशय और अवसाद के उस गढ़े में गिरने से बचा लिया, जो उसने अपने अशुद्ध दार्शनिक विचारों द्वारा खोदा था। उस निपट अज्ञानी की अवस्था सचमुच अधिक स्पर्धा के योग्य है, जिसे ऐसे विचार नहीं सताते। उचित रीति से दार्शनिक अनुशीलन किसी और परिणाम पर पहुंचाता है। शंकराचार्य इससे कितना सर्वथा भिन्न कहते हैं–

मैं का कौन निराकरण करता है ?–

समस्त प्रमाण आदि व्यवहारों का आश्रय होने से आत्मा प्रमाण आदि व्यवहारों से पूर्व सिद्ध है। **आत्मा तु प्रमाणादिव्यवहाराश्रयत्वात् प्रागेव प्रमाणव्यवहारात् सिद्धयति** (शांकरभाष्य वेदा. 2.3.7.) अर्थात् आत्मा स्वतः सिद्ध प्रत्यक्ष एवं प्रमाणनिरपेक्ष है। जो इसे स्वीकार नहीं करता, वह भी प्रकारान्तर से इसे स्वीकार ही करता है। इन्कार वास्तव में स्वीकारता का द्योतक है **य एव हि निराकर्त्ता तदेव तस्य स्वरूपम्** (शांकरभाष्य वेदान्त 2.3.7.) जो निराकरण करता है, उसके बिना निराकरण बन ही नहीं सकता। कौन निराकरण करता है ? कोई नहीं? क्योंकि कोई है नहीं। यदि निराकरण करने वाला है तो उसकी सत्ता निःसन्देह एवं प्रमाणनिरपेक्ष सिद्ध है। **न ह्यात्मागन्तुकः कस्यचित्, स्वयंसिद्धत्वात् न ह्यात्मात्मनः प्रमाणमपेक्ष्य सिद्धयति** (शांकर भाष्य वेदान्त 2.3.7.)

'गंगा ज्ञान सागर' से साभार
सम्पादक प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

वास्तव में धर्म क्या है?

● डॉ सुशील वर्मा

धर्म के विषय पर जब चर्चा होती है तो प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अपनी राय होती है। कभी जाति के नाम पर, कभी सम्प्रदाय व पंथ के अनुरूप। हर व्यक्ति का अपना धर्म, अपना ईश्वर, अपनी प्रथाएँ–विश्व की सर्वश्रेष्ठ प्रथा आदि–आदि। धर्म की अपनी मर्जी का अपनी सुविधा के अनुसार व्याख्या और अर्थ का अनर्थ करके अनेक धार्मिक नेता व राजनेता अपना–अपना उल्लू सीधा करते हैं। परिणाम स्वरूप कट्टरवाद की स्थापना। कई ऐसे मत वाले भी हैं जो धर्म को अफीम का नाम देते हैं और इसका प्रयोग अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए करने से चूकते भी नहीं। यदि हम इस विषय पर चिन्तन करें कि वास्तव में धर्म है क्या? उसके वास्तविक स्वरूप का गंभीरता से विचार करें तभी इसके उद्देश्य पर हम किसी स्पष्ट परिणाम पर पहुँच सकते हैं।

धर्म शब्द **'धृञ् धारणे'** धातु से बना है। **'धरतीति धर्मः'** अर्थात् जो धारण करे उसी को धर्म कहते हैं। धर्म ने ही सारे संसार को धारण कर रखा है। वैशेषिक दर्शन में कणाद ऋषि धर्म की परिभाषा के विषय में कहते हैं **"यतोऽभ्युदयनिःश्रेयस्सिद्धिः स धर्मः"** अर्थात् जिससे लौकिक और पारलौकिक उन्नति हो वही धर्म है।

धारणाद् धर्म इत्याहुः
धर्मो धारयते प्रजाः।
यः स्याद् धारण–संयुक्तः
स धर्म इति निश्चयः।।

वे गुण या धर्म जो विश्व को शान्ति, सद्भाव, समुन्नति और सुरक्षा प्रदान कर सकें, वे सभी तत्व धर्म के अन्दर संगृहीत हैं। इसलिए कहा गया है कि समाज के धारक तत्त्वों को धर्म कहते हैं। जो गुण अथवा धर्म समाज को स्थिरता प्रदान करते हैं, वे सभी गुण सत्य, अहिंसा, परोपकार, सहष्णुता, उद्योग आदि धर्म के मूलभूत तत्त्व हैं।

कणाद ऋषि ने लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति को ही धर्म कहा है। लौकिक उन्नति के अर्न्तगत व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, आर्थिक, व्यापारिक, शैक्षिक, व वैज्ञानिक आदि सभी प्रकार की उन्नति अन्तर्निहित है। इसी प्रकार पारलौकिक उन्नति के अर्न्तगत आत्मिक उन्नति का समावेश होता है। संसार की उन्नति तभी है यदि समस्त मानव समाज की उन्नति हो। जीवात्मा मनुष्य योनि में आकर ही धर्म पालन करता हुआ सांसारिक उन्नति करते हुए मोक्षपद प्राप्त कर सकता है। धर्म–अधर्म की प्रवृति मानव शरीर के द्वारा ही सम्भव है, अन्य योनियों में नहीं।

उपरोक्त उन्नति तभी हो सकती है यदि सभी एक साथ प्रयत्न करें। परस्पर भेदभाव न हो। वेद में (ऋग्वेद) ऐसे ही मानव धर्म के आचरण पर बल दिया गया है।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवाभागं यथा पूर्वे संज्जानाना उपासते।।
ऋग् 10,191,2

सब मनुष्यों के विचार समान हों, सभी समितियाँ समान हों, सबका मन एक हो और एक साथ चित्त समान उद्देश्य वाला हो।

समानो मन्त्रः समितिः समानी
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
ऋग् 10,191,3.

इसी शृंखला में कहा है– तुम्हारे संकल्प समान हों, तुम्हारे ह्रदय परस्पर मिले हों, मन एक समान हो, जिससे तुम सभी परस्पर मिलकर एक होकर रहो।

समानी व आकृतिः समाना ह्रदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।
ऋग् 10.191.4,

इसी प्रकार की भावनाएँ जागृत करने के लिए वेदों के उपदेश हमारा मार्ग–दर्शन करने के लिए अति लाभप्रद है। वेद तो कहता है–सभी की मित्र की दृष्टि से देखो।

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।
यजु 36.18

अथर्ववेद का मन्त्र तो इतना तक कहता है कि तुम्हारे जल पीने का स्थान एक हों। तुम्हारे खान–पान भोजन एक साथ हो, मैं तुम सबको एक धुरे से जोड़ता हूँ।

समानी प्रजा सह वोऽन्नभागः
समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।।
अथर्व 3.30.6

कहने का तात्पर्य यह कि सभी परस्पर मिल जुल कर रहें। परस्पर कोई भेदभाव छुआछूत, ईर्ष्या, द्वेष न हों। ऐसी ही अभिव्यक्ति तैत्तिरीय आरण्यक (10, 1) में वर्णित है

सहनाववतु। सह नौ भुनक्तु।
सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वीनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।
तै. 3.9.1

अर्थात् हम एक दूसरे की रक्षा करें, परस्पर साथ–साथ भोजन करें, बल पराक्रम को साथ–साथ बढ़ाएँ। हमारे द्वारा वेदादि शास्त्रों का किया गया अध्ययन तेजस्वी हो। परस्पर कभी द्वेष न करें। वेद का तो आदेश है **'मुनर्भव'।** ऋग् 10.53.16,

हे मानव तू मनुष्य अर्थात् मननशील बन। जो मनुष्य का कल्याण चाहे वही सच्चा मानवधर्म है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा
कश्चिद्‌दुःखमाग्भवेत्।।

धर्म के विषय में मनु का कथन है कि वेद, स्मृति, वेदानुकूल मनुस्मृति आदि धर्म–शास्त्र, सत्पुरुषों का आचार व्यवहार और अपने आत्मा में प्रिय (अर्थात् जिसको आत्मा चाहता है।) ये चार धर्म के लक्षण कहे गए हैं। इसी से धर्म–अधर्म का निश्चय होता है।

वेद स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चुतर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्।।
मनु 2.12

'मनु' ने तो आचार–व्यवहार को परम धर्म कहा है। जो व्यक्ति धर्माचरण से रहित है वह तो वेद प्रतिपादित धर्मजन्य सुख फल को प्राप्त हो ही नहीं सकता। **"आचारः परमो धर्मः"** (मनु) सदाचार के प्रति तो महर्षि पतंजलि ने **'योग शास्त्र'** में योग के अष्टांग में सर्वप्रथम **यम** एवं **नियम** पालन या आदेश दिया है। यह पूर्णतः विदित है कि यम को अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह तथा 'नियम' के अन्तर्गत शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर प्राणिधान द्वारा परिभाषित किया है।

'मनु' ने तो धर्म के दस लक्षण बताए हैं–

धृति, क्षमा दमोऽस्तेयं
शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं
धर्मलक्षणम्।।
मनु 6.92

(1) धृतिः–सदा धैर्य रखना **(2) क्षमा**–निन्दा, स्तुति भाव–अपमान, हानिलाभ आदि दुःखों में भी सहनशील रहना। **(3) दम**–सदा धर्म में प्रवृत कर अधर्म से रोक रखना। **(4) अस्तेय**–चोरी, त्याग बिना आज्ञा का छल कपट से पर पदार्थ ग्रहण कर को रोकना। **(5) शौच**–राग, द्वेष, पक्षपात छोड़ कर पवित्रता रखना। **(6) इन्द्रिय निग्रह**–अधर्माचरणों से रोक कर इन्द्रियों को धर्म में चलाना। **(7) धीः** बुद्धिनाशक पदार्थों, दुष्टों का संग छोड़ कर आलस्य, प्रमाद त्याग एवं सत्पुरुषों का संग। **(8) विद्या**–यथार्थ ज्ञान और उनसे यथा योग्य उपकार लेना–विद्या है। **(9) सत्य** – जैसा आत्मा में, वैसा मन में, जैसा मन में, वैसा वाणी में और जैसा वाणी में वैसा कर्म में बर्ताना। **(10) अक्रोध**–क्रोधादि आदि दोषों को छोड़ कर शान्त आदि गुणों का ग्रहण।

वास्तव में देखा जाए तो ये धर्म के लक्षण क्या हैं? ये सभी लक्षण Morality अर्थात् नैतिकता के परिचारक हैं। इस प्रकार धर्म कोई पूजा–पाठ पद्धति नहीं। पूजा–पाठ पद्धति तो हर देश की, जाति की, सभ्यता व संस्कृति के अनुरूप अलग–अलग हो सकती है। परन्तु सार्वभौमिक गुण जो हमें मानव समाज की उन्नति, आपसी सौहार्द एवं उत्तम गुणों के प्रति हमें जागरूक कर श्रेष्ठ समाज व राष्ट्र के निर्माण के प्रति प्रोत्साहित करते हैं वही धर्म है। यह अपना है, यह पराया है. ऐसा समदर्शी लोग नहीं सोचते। महापुरूषों के लिए सभी मनुष्य समान होते हैं।

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

गुरु गोविन्द सिंह ने भी इसी उदारता का परिचय देते हुए कहा है

"मानस की जात
सबै एकहि पहिचानबौ"

धर्म का अर्थ कर्तव्यपालन है। जितने भी शुभ कर्म मुनष्य के करने के लिए हैं वे सभी धर्म के अन्तर्गत आ जाते हैं।

गीता में भी कहा है–**"स्वधर्मे निधनं श्रेयः"।** गीता 3.35

हे अर्जुन! अपने धर्म में अर्थात् अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए मृत्यु को प्राप्त होना ही श्रेष्ठ है।

धर्म अन्धविश्वास की वस्तु नहीं है। अपितु सत्य, असत्य को जानकर तर्क–युक्ति प्रमाण के द्वारा यथार्थता को प्रमाणित करके ग्रहण करने योग्य है।

यस्तर्केणानुसंधत्ते स धर्मं वेद नेतरः।।
मनु 12.106

सारांश यही कि जिसमें लौकिक और पारलौकिक उन्नति हो वही धर्म है।

मास्टर मूल चन्द वर्मा गली
फाजिलका (पंजाब)–152123
मो. 7009822720

पत्र/कविता

चित्तू पांडेय

चित्तू पांडेय का जन्म उत्तर प्रदेश में बलिया जिले के रत्तूचक गाँव में वर्ष 1865 में हुआ था। वे बचपन से ही ब्रिटिशों से नफरत करते थे, पर उनकी राजनैतिक विचारधारा ने ठोस आकार तब लिया, जब 1925 में गांधी जी बलिया आए और एक सभा को संबोधित किया था। गांधी से प्रभावित चित्तू पांडेय कांग्रेसी हो गए और अपना पूरा जीवन आज़ादी के आंदोलन के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में बड़ी भूमिका निभाई। नौ अगस्त, 1942 को कांग्रेस नेताओं की गिरफ्तारी की खबर बलिया पहुँचते ही अगले दिन सभी स्कूल बंद कर दिए गए और लोग सड़कों पर उतर गए। चित्तू पांडेय समेत दूसरे नेता गिरफ्तार हो गए थे। जिले के हर प्रमुख स्थान पर प्रदर्शन और हड़ताल शुरु हो गई। पांडेयपुर गाँव के क्रांतिकारियों की एक गुप्त मंत्रणा हुई, जिसमें प्रमुख स्थानों पर कब्जा कर 19 अगस्त को बलिया को अंग्रेजों से मुक्त कराने का फैसला लिया गया। तय योजना के अनुसार, लोगों ने अंग्रेजी सत्ता के सभी प्रतीकों, जैसे– बेल्थरा रोड रेलवे स्टेशन, डाकघर और विदेशी कपड़ों की दुकानों पर हमला बोला। क्रांतिकारियों ने मालगाड़ी लूट ली और बाँसडीह स्थित तहसील मुख्यालय पर भी कब्जा कर लिया। वहाँ से भीड़ बैरिया थाने पर पहुँची। रात में पुलिस की मौजूदगी में फिर ब्रिटिश ध्वज फहरा दिया। अगले दिन थाने पर तिरंगा फहराने की कोशिश में सत्रह क्रांतिकारियों को जान गँवानी पड़ी। इससे क्रांतिकारियों में गुस्सा इतना बढ़ा कि जिला मुख्यालय पर क्रांति की ज्वाला धधक उठी। स्थिति को नियंत्रण से बाहर जाते देख प्रशासन ने जेल में बंद चित्तू पांडेय से बात की। 19 अगस्त को चित्तू पांडेय और उनके समर्थकों को अंग्रेजों को तब जेल से रिहा करना पड़ा, क्योंकि उन्हें पता चला कि अपने नेता को छुड़ाने के लिए हजारों हथियारबंद लोग जेल की ओर बढ़ रहे हैं। प्रशासन को यह आश्वासन भी देना पड़ा कि वह किसी के खिलाफ़ कारवाई नहीं करेगा। लेकिन अगले ही दिन जब पुलिस ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरु की, तो लोगों ने अंग्रेज़ी शासन से स्वतंत्रता की घोषणा की और चित्तू पांडेय को अपना प्रमुख घोषित किया। बलिया में एक समानांतर राष्ट्रीय सरकार गठित हुई, जिसने दस में से सात पुलिस थानों पर अधिकार जमा लिया और कलेक्टर को सत्ता त्यागने तथा सभी गिरफ्तार कांग्रेसियों को रिहा करने के लिए मज़बूर किया। नागरिक प्रशासन चलाने के लिए अलग–अलग इलाकों के लिए अलग–अलग पंचायतों की स्थापना की गई। कांग्रेस कार्यकर्ताओं को शहर की रक्षा के लिए नियुक्त किया गया। लेकिन क्रांतिकारियों की वह राष्ट्रीय सरकार कुछ ही दिन तक बनी रह सकी। 22–23 अगस्त की मध्य रात्रि को सेना ने बलिया में प्रवेश किया और जनता की सरकार को उखाड़ फेंका। उसी के साथ अंग्रेज़ों का भीषण दमन चक्र शुरु हुआ। हालांकि चित्तू पांडेय के बारे में कहा जाता है कि वह भाग निकलने में सफल रहे। चित्तू पांडेय ने खुद को गांधीवादी ही कहा, लेकिन बलिया में भारत छोड़ो आंदोलन की सफलता को देखकर पंडित जवाहरलाल नेहरु और सुभाष चंद्र बोस ने चित्तू पांडेय को बलिया के शेर की उपाधि दी थी। अलबत्ता यह विडंबना ही है कि आज़ादी से पहले बलिया को ब्रिटिशों से आज़ाद कराने में बड़ी भूमिका निभाने वाले चित्तू पांडेय आज़ाद भारत का सूरज नहीं देख पाए। छह दिसंबर, 1946 को उन्होंने आखिरी साँस ली। बलिया शहर के चौराहे का नाम उनके नाम पर रखा गया है।

स्वामी गुरुकुलानन्द 'कच्चाहारी'
पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड)
'इतिहास के बिखरे पन्ने' से साभार

****

जयघोष

होश खो–खो के हर इक जोश हुआ जाए है।
बीच बाज़ार में मदहोश हुआ जाए है।

दिल में जलती है अगन और धुआँ उठता है,
आज संतोष असंतोष हुआ जाए है।

साँप में उसमें रहा फ़र्क न कुछ भी बाकी,
व्यक्ति एहसान फरामोश हुआ जाए है।

दौड़ किस खड्ड में पटकेगी हमें ले जाकर,
प्यार अब वैर का आगोश हुआ जाए है।

सौंप दे किसको भला देश की किस्मत यारो,
काफ़िला कौम का बेहोश हुआ जाए है।

मित्र हिंसा का अहिंसा की दुहाई देता,
क़त्ल कर–करके वो निर्दोष हुआ जाए है।

किससे मालूम करें देश का यौवन क्या है,
मुट्ठियाँ भींच के आक्रोश हुआ जाए है।

बोलते सिर्फ़ शहर, साँझ सवेरे गूँगे,
गाँव श्मशान सा खामोश हुआ जाए है।

ढीठ कितना है 'मनीषी' ये अहम् का पुतला,
हारकर जीत का जयघोष हुआ जाए है।

प्रो. डॉ सारस्वत मोहन 'मनीषी'
डी–801, बैस्टेक पार्क व्यू संस्कृति एपार्टमेंट,
सैक्टर –92, नया गुरुग्राम हरियाणा–122505

आर्य समाज से

मेरे समाज, प्यारे समाज
ऋषिवर की थाती मूल्यवान, हर मन पर तेरा अचल राज
गंगा सम शुचि पावन शरीर, तुम तीर्थराज के विमल तीर
सागर सम तव गर्जन गंभीर, तुम परम सन्त, तुम परमवीर
शत्रु के काल अबला की लाज मेरे समाज, मेरे समाज
तुम रामचन्द्र के धनुषबाण तम चक्र सुदर्शन के समान
गोविन्द सिंह की तुम कृपाण, तुम दयानन्द के वेद ज्ञान
जगती में तुम सा कौन आज। मेरे समाज, मेरे समाज
धारण कर शिर पर श्रुति गंगा, मस्तक पर शीतल चन्द्र विभा
विष पी पी कंठ हुआ नीला, अरि–सर्पों को भी गले लगा
तुम ने शंकर का किया साज। मेरे समाज, मेरे समाज
ओ विश्व वंद्य जग उद्बोधक, अग–जग में वेद सुधा वितरक
सत्यानृत के सच्चे शोधक, तेरी ही महिमा का द्योतक
भारत ने जो पाया स्वराज।
महाशक्ति, ओ महातपी उज्ज्वल विवेक, हे उच्च सुधी।
तुम प्रखर सूर्य सम तेजस्वि तुम शीतल चन्द्र समान कभी
तुम आर्य जाति के दिव्य, ताज मेरे समाज मेरे समाज

उत्तमचन्द्र 'शरर'
इन्द्रधनुष से साभार

डी.ए.वी. पुलिस पानीपत में नशा मुक्त राष्ट्र का संकल्प

माननीय पद्म श्री डॉक्टर पूनम सूरी डी.ए. वी सी. एम.सी के अध्यक्ष जी के राष्ट्रहित हेतु लिए गए संकल्प 'नशा मुक्त राष्ट्र' को दृढ़ता प्रदान करने के लिए चलाई गई मुहिम NO NASHA NATION CAMPAIGN का सफल आयोजन श्री योगी सूरी जी आर्य युवा समाज के अध्यक्ष के दिशा निर्देश में डी.ए. वी. पुलिस पब्लिक स्कूल,पानीपत द्वारा 7 दिसंबर 2025 को सुताना गाँव में किया गया।

इस अभियान के अंतर्गत ग्राम वासियों को जागरूक करने व सकारात्मकता का प्रचार प्रसार करने हेतु 101 कुंडीय हवन का आयोजन, रैली और नुक्कड़ नाटक किए गए। इस अभियान को सशक्तता प्रदान करने हेतु मुख्य अतिथि स्वरूप हरियाणा राज्य के शिक्षा मंत्री माननीय श्री महिपाल ढाँडा जी सम्मिलित हुए और उन्होंने आश्वासन दिया कि वे इस अभियान में अपना भरपूर सहयोग देंगे और राष्ट्र को नशा मुक्त बनाएँगे।

इस अभियान में शहर और गाँव के भी कई अन्य माननीय अधिकारी शामिल हुए, जिनमें प्रमुख श्रीमती कोमल सैनी, मेयर, पानीपत, श्री राकेश बूरा, डीईओ, पानीपत, श्री सतीशवत्स, उपपुलिस अधीक्षक, पानीपत, श्री सोनू कुमार, सरपंच सुताना,श्री हरिपाल कादियान, सरपंच जाटल, श्री मदन लाल, सरपंच भादड़, श्री पवन बंसल, अध्यक्ष, वैदिक परिवार, डॉ. राजवीर आर्य, सचिव, वैदिक परिवार, श्री सुरेंद्र कुमार, प्रधान, आर्य समाज श्री वीरेंद्र, प्रधान, आर्य समाज रहे।

प्रधानाचार्या श्रीमती सुमिता अरोड़ा जी द्वारा उपस्थित अभिभावकों एवं समाज से अपील की गई कि वे इस राष्ट्रव्यापी "No Nasha Nation Campaign" में सहयोग करें। उन्होंने कहा कि यह अभियान समाज के नैतिक ढाँचे को मज़बूत करने और युवा पीढ़ी को सुरक्षित भविष्य देने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है।

डी.ए.वी. कोटा में यज्ञ करके मनाया श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

डी.ए.वी. कोटा में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस छात्र–छात्राओं के अभिभावकों के संग यज्ञ करके मनाया गया। यह यज्ञ विद्यालय की प्राचार्या के यजमानत्व एवं धर्मशिक्षक के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ में उपस्थित सभी अभिभावकों एवं छात्रवर्ग ने पवित्र वेदमन्त्रोच्चार के साथ आहुतियाँ प्रदान कीं।

विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती पल्लवी अरोड़ा ने अपने सम्बोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द का बहुमुखी व्यक्तित्व हम सबके लिए अनुकरणीय है। स्वामी जी ने गुरुकुल एवं कन्या पाठशाला की स्थापना करके समाज में शिक्षा की अलख जगाई। उनके अनुसार शिक्षा वही है जो समाज कल्याण से अभिप्रेरित हो, जिसमें सर्वहित भी समाहित हो।

विद्यालय के धर्मशिक्षक आचार्य शोभाराम ने स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतिव पर प्रकाश डालते हुए कहा कि–स्वामी श्रद्धानन्द एक राष्ट्रवादी सन्त थे, उनकी कर्तव्यनिष्ठा एवं वैदिक सिद्धान्तों का जीवन में पालन आज भी हम सबके लिए अनुकरणीय हैं। यदि हमारा स्वयं पर नियन्त्रण हो जाए तो हम भी स्वामी जी की तरह जीवन में उच्च आदर्श प्रस्तुत कर सकते हैं और अपने जीवन को राष्ट्रहित में लगा सकते हैं। शान्तिपाठ एवं प्रसाद वितरण के बाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

डी.ए.वी. वेस्ट पटेल नगर, दिल्ली में आरोग्यम्–स्वास्थ्य उत्सव

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, वेस्ट पटेल नगर में, रोटरी क्लब के सहयोग से आयोजित आरोग्यम्–स्वास्थ्य उत्सव सम्पन्न हो गया। सी.के. बिरला हॉस्पिटल के डॉक्टरों की एक समर्पित टीम ने विभिन्न स्वास्थ्य परीक्षण किए और प्रतिभागियों को महत्वपूर्ण मेडिकल सहायता प्रदान की। उन्होंने शिविर में रक्तचाप जाँच, ब्लड शुगर जाँच, बोन मिनरल डेंसिटी टेस्ट, पल्मोनरी फंक्शन टेस्ट, रक्त जाँच, ECG जैसी सेवायें निःशुल्क उपलब्ध करवाईं।

क्लोव डेंटल क्लिनिक द्वारा मुफ्त डेंटल चेक–अप और सेव साइट सेंटर के विशेषज्ञों द्वारा आंखों की जाँच की गई।

कार्यक्रम में रक्तदान कैंप के अन्तर्गत कई स्वयंसेवक आगे आए और निस्वार्थ भाव से रक्तदान किया।

प्रधानाचार्या ने रोटरी क्लब के पदाधिकारियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन समाज के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं।

इस शिविर में विद्यालय के शिक्षकगण, अभिभावकगण एवं सहयोगी स्टाफ ने सक्रिय सहभागिता निभाई।

कार्यक्रम का समापन सभी प्रतिभागियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए किया गया तथा भविष्य में भी ऐसे जनकल्याणकारी कार्यक्रम आयोजित करने का संकल्प किया गया।

माता–पिता और समुदाय के सदस्यों की उत्साही भागीदारी ने इस पहल में बहुत अधिक मूल्य जोड़ा।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2024-25-26
Posted at L.P.C.(Delhi RMS)D110006 ON Wednesday & Thursday, 2025

डी.ए.वी. सेक्टर-14, गुरुग्राम द्वारा 'NO Nasha Nation अभियान'

आर्य युवा समाज के मार्गदर्शन में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सेक्टर–14, गुरुग्राम द्वारा 'NO Nasha Nation अभियान' के अंतर्गत दो चरणों में जागरूकता का सफल आयोजन किया गया। अभियान का उद्देश्य युवाओं को नशे से दूर रखते हुए उन्हें स्वस्थ, संयमित एवं उद्देश्यपूर्ण जीवन के प्रति प्रेरित करना था।

प्रथम चरण 7 दिसम्बर, 2025 को रामलीला ग्राउंड, भीमनगर में शत–कुंडीय वैदिक हवन एवं जागरूकता रैली के साथ सम्पन्न हुआ जबकि द्वितीय चरण में 9 दिसम्बर, 2025 को सेक्टर–14 स्थित सामुदायिक केंद्र में निवास कल्याण समिति (RWA) के सहयोग से एक प्रभावशाली जन–जागरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रमों का संचालन एवं मार्गदर्शन विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती अपर्णा एरी द्वारा किया गया। दोनों आयोजनों का शुभारम्भ वैदिक मंत्रोच्चार से हुआ। कार्यक्रम में डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधक समिति के उपाध्यक्ष श्री अनिल राव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथियों में आर्य केंद्रीय सभा, आर्य विद्या मंदिर विद्यालय, आर्य समाज भीमनगर एवं आर्य समाज सेक्टर–7 के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

सामुदायिक केंद्र, सेक्टर–14 में आयोजित कार्यक्रम में गुरुग्राम के विधायक श्री मुकेश शर्मा, मेयर श्रीमती राजरानी मल्होत्रा मुख्य अतिथि बनें।

प्रत्येक कार्यक्रम में 100 कुंडीय वैदिक हवन, जागरूकता रैली, विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत नुक्कड़ नाटक, कविता वाचन एवं प्रेरक संदेशों द्वारा नशे के दुष्परिणामों को अत्यंत प्रभावी ढंग से उजागर किया गया।

मुख्य अतिथियों ने अपने संबोधनों में युवाओं को राष्ट्र–निर्माण की सबसे बड़ी शक्ति बताते हुए नशे से दूर रहने का आह्वान किया।

अंत में विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों एवं नागरिकों ने "NO नशा Nation" की सामूहिक प्रतिज्ञा लेते हुए नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया।

डी.ए.वी. नाभा में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस

डी.ए.वी सेंटनरी पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल नाभा के प्रांगण में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में यज्ञ का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सर्वप्रथम विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों तथा सभी छात्र–छात्राओं ने स्वामी श्रद्धानंद जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। छात्र–छात्राओं ने प्रातः सभा में स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान दिवस पर स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला। स्वामी श्रद्धानंद जी पर मधुर स्वर में भजन गायन किया गया।

विद्यालय में हवन का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय के सभी शिक्षकों एवं छात्र–छात्राओं ने हवन के मंत्रो का शुद्ध उच्चारण करते हुए वातावरण को आध्यात्मिक बना दिया। विद्यालय के संगीत शिक्षक श्री कुलदीप राय ने छात्र–छात्राओं सहित मधुर स्वर में भजन गायन किए।

प्रधानाचार्य श्री संजय कुमार ठाकुर ने सभी छात्र–छात्राओं को स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन परिचय से प्रेरणा लेने के लिए प्रेरित किया उन्होंने सभी छात्रों को स्वामी श्रद्धानंद जी की जीवन गाथा से परिचित करवाते हुए उनकी स्मृति को तरोताजा किया

अंत में सभी छात्र छात्राओं एवं विद्यालय के समस्त कर्मचारियों को प्रसाद वितरण करते हुए कार्यक्रम का समापन किया गया।

चण्डीगढ़ में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज सेक्टर 16 डी चंडीगढ़ के प्रांगण में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा चंडीगढ़ ,आर्य समाज सेक्टर 16 डी द्वारा "स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस (नशा मुक्त राष्ट्र)" में भजन संध्या का आयोजन किया गया। जिसमें भजनोपदेशक डॉ. विजयपाल शास्त्री जी ने अपनी सम्पूर्ण टीम के साथ स्वामी श्रद्धानंद जी के भजन गायन से समा बाँध दिया। पंडित दाऊ दयाल जी ने श्रद्धा और आनंद से भरपूर भजन प्रस्तुत किया।

आर्य समाज के प्रधान डॉक्टर बी सी जोसन ने सभी आर्यों का स्वागत किया तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा चण्डीगढ के प्रधान प्रिंसिपल आर सी जीवन जी को बधाई दी। उन्होंने आर्य युवा समाज को नशा मुक्त राष्ट्र बनाने का संदेश दिया।

पंजाब विश्वविद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ वीरेंद्र अलंकार जी ने अपने वक्तव्य में श्रद्धानंद जी को लोह पुरुष बताते हुए उनके कार्यों एवं विचारों से अवगत कराया।

मुख्य अतिथि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा चंडीगढ के प्रधान, प्रि. आर सी जीवन जी ने आर्यो का दायित्व समझाया और उनको यह दायित्व निभाने का आग्रह किया।

प्रिंसीपल श्रीमती अनुजा जी ने भजन प्रस्तुत किया। मंत्री डॉक्टर सीमा कंवर ने बताया–स्वामी श्रद्धानंद महान राष्ट्रभक्त थे जिन्होंने अपना जीवन स्वाधीनता, शिक्षा और वैदिक धर्म के लिए समर्पित कर दिया" और "दलितोद्धार के लिए कार्य किया, शुद्धि आंदोलन चलाया और हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए संघर्ष किया"। कार्यक्रम का समापन शांति पाठ एवं ऋषिप्रसाद से हुआ।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **फर्स्ट इम्प्रैशन कार्पोरेट सर्विसिज, (प्रा.) लि.,** ई.113–114, सैक्टर–63, नोएडा, उ.प्र.–201301 (दूरभाष : 120–4246315) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**